वर्ष 43, मार्च 2026

मुद्रापथ

आस्था के साधनों के निर्माता

बैंक नोट मुद्रणालय, देवास (म.प्र.)

(सिक्योरिटी प्रिंटिंग एंड मिंटिंग कॉरपोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड की इकाई)

आईएसओ – 9001 : 2015, 45001 : 2018, 50001 : 2018 प्रमाणित इकाई

"माननीय संसदीय राजभाषा समिति, भारत सरकार की तीसरी उपसमिति द्वारा दिनांक 15 अक्टूबर 2025 को इन्दौर में सम्पन्न बैंक नोट प्रेस देवास के सफल निरीक्षण पश्चात प्राप्त प्रमाण पत्र एवं झलकियाँ"

सत्यमेव जयते

संसदीय राजभाषा समिति

गृह मंत्रालय / भारत सरकार

निरीक्षण प्रमाण-पत्र

संसदीय राजभाषा समिति का गठन राजभाषा अधिनियम 1963 की धारा 4 के तहत वर्ष 1976 में किया गया। यह एक विशेषाधिकार प्राप्त समिति है। इस समिति में 30 संसद सदस्य हैं, 20 लोक सभा से और 10 राज्य सभा से। माननीय गृह मंत्री जी इस समिति के अध्यक्ष हैं। इस समिति का प्रमुख कार्य संघ के राजकीय प्रयोजनों के लिए हिंदी के प्रयोग में हुई प्रगति की पुनरीक्षण और समीक्षा कर सिफारिशें करते हुए अपनी रिपोर्ट माननीय राष्ट्रपति जी को प्रस्तुत करना है।

इसी क्रम में संसदीय राजभाषा समिति द्वारा दिनांक ....15.10.2025........ को ....बैंक नोट मुद्रणालय, देवास........ का निरीक्षण किया गया। समिति द्वारा निरीक्षण में आपके कार्यालय में राजभाषा हिंदी के प्रयोग व कार्यान्वयन को उत्कृष्ट/[redacted] पाया गया।

(भर्तृहरि महताब) उपाध्यक्ष संसदीय राजभाषा समिति	(श्रीरंग आप्पा बारणे) संयोजक तीसरी उप-समिति

कार्यालय का पता: 11, तीन मूर्ति मार्ग, नई दिल्ली-110011, दूरभाष : 011-21411165/21411492
Email: 3rdsubcommittee@gmail.com

बैंक नोट मुद्रणालय, देवास
(गृह पत्रिका आंतरिक परिचालन के लिए)

.'मुद्रापथ'
आस्था के साधनों के निर्माता

अनुक्रमणिका
अंक - 43, वर्ष - 2026

गृह पत्रिका 'मुद्रापथ'
बैंक नोट मुद्रणालय, देवास (म.प्र.)-455001

संरक्षक
श्री केदारनाथ महापात्र
मुख्य महाप्रबंधक
बैंक नोट मुद्रणालय देवास एवं
अध्यक्ष, न.रा.का.स. देवास

सह संरक्षक
श्री एस.एस. राठौर
अपर महाप्रबंधक (कारखाना प्रबंधक)

प्रकाशक
श्री सुनील दुपारे
संयुक्त महाप्रबंधक (मा.सं)

प्रधान संपादक
देवेन्द्र तिवारी
प्रबंधक (रा.भा.) एवं सचिव, न.रा.का.स. देवास

संपादकीय सहयोग
विवेक प्रसाद
वरिष्ठ पर्यवेक्षक (रा.भा.)
फूलवती अलावा
पर्यवेक्षक (मा.सं)

गृह पत्रिका में प्रकाशित लेख एवं रचनाओं की मौलिकता की संपूर्ण जिम्मेदारी संबंधित रचनाकार की है, इससे प्रबंधन एवं संपादक मंडल का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

अनुक्रमणिका

क्रं.	रचना	रचनाकार	पेज नं.
	संदेश		02-08
	संपादकीय		09
1.	बिज़नेस फाइनेंस क्या है	विवेक सिंह	10
2.	दरवाजा, दीवारें और छत	फूलवती अलावा	11
3.	आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के युग में साइबर सुरक्षा की चुनौतियां	योगेन्द्र भदानिया	12
4.	जागरूक समाज, बेहतर कल	परदीप कुमार शर्मा	14
5.	समय प्रबंधन	सिद्धार्थ श्रीवास्तव	16
6.	प्रेमचंद की जीवनी - जीवन परिचय	विवेक प्रसाद	18
7.	इलाज का धंधा	गौरव कुमार	20
8.	आँगन की चिड़िया	दीपाली ठाकुर	21
9.	छलकता हृदय अब कैसे विलुप्ति के कगार पर	जगदीश पटेल	23
10.	फल और हमारा स्वास्थ	वृंदा खांडवे	24
11.	तीन पुतले	साज़िद खान	25
12.	मौसी माँ- एक अनोखा बंधन	संदीप दानी	26
13.	भय बिनु होइ ना प्रीति - से प्रबंधन की अहम शिक्षा	आशीष कुमार खरे	27
14.	मॉरीशस का रहस्यमयी मूड़िया पहाड़	अमन कुमार	28
15.	कहाँ गई हमारी संस्कृति	नालंदा बागडे	29
16.	अमर बेल की चोरी	ऐश्वर्या चौरे	30
17.	जल है तो धरती है	धर्मेन्द्र कुमार यादव	31
18.	एंटीक	अनुपमा सिंह	32
19.	मेट्रो की तस्वीर	परदीप कुमार शर्मा	32
20.	फुर्र-फुर्र	अनिल कुशवाहा	33
21.	जुलाहा स्वर्ग कैसे चला गया	रोहित गोयल	34
22.	कृत्रिम बुद्धियुक्त मानव (रोबोट)	प्रवीण कुमार सिन्हा	35
23.	भारतीय संस्कृति और आधुनिकता का संगम	शितमाला चौहान	36
24.	जीवन: एक यात्रा, गंतव्य नहीं	मंगेश ढोरे	37
25.	कड़वी घूंट	लालचन्द्र गुप्ता	37
26.	मौसम की पहली बारिश	धर्मेन्द्र रेनिवाल	38
27.	आपकी जेब में चल रहा जासूस	प्रशांत महाजन	39
28.	न.रा.का.स. देवास	-	40
29.	विविध गतिविधियों की कहानी चित्रों कि जुबानी	-	41-48

सिक्योरिटी प्रिंटिंग एंड मिंटिंग कॉरपोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड
(भारत सरकार के पूर्ण स्वामित्वधीन)
Security Printing and Minting Corporation of India Limited
(Wholly owned by Government of India)

हिन्दी है जन-जन की अभिलाषा
50
स्वर्ण जयंती वर्ष

अध्यक्ष तथा प्रबंध निदेशक
Chairman & Managing Director

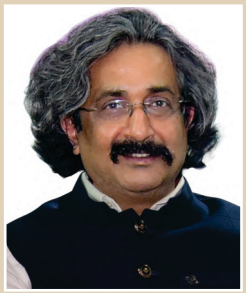

अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक की ओर से...

यह जानकर मुझे अत्यंत हर्ष की अनुभूति हो रही है कि एसपीएमसीआईएल की प्रतिष्ठित इकाई बैंक नोट मुद्रणालय, देवास द्वारा गृहपत्रिका **'मुद्रापथ'** का नूतन अंक प्रकाशित किया जा रहा है।

एसपीएमसीआईएल के सर्वोत्तम मानकों के अनुकूल अद्यतन प्रौद्योगिकी को अपनाकर बैंक नोट मुद्रणालय, देवास अपने विशिष्ट उत्पाद करेंसी का मुद्रण एवं सुरक्षा इंक के उत्पादन के साथ-साथ राजभाषा के प्रचार प्रसार में भी वर्षों से अग्रसर है। मुझे यह जानकर हर्ष हुआ है कि बैंक नोट मुद्रणालय, देवास के द्वारा दशकों से नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, देवास के अध्यक्ष कार्यालय के रूप में, इकाई केसाथ-साथ, देवास में स्थित सभी केन्द्रीय कार्यालयों, उपक्रमों, बैंकों आदि में भी भारत सरकार की राजभाषा नीति का कार्यान्वयन एवं प्रचार-प्रसार किया जा रहा है। दि. 14-15 सितंबर 2025 को गांधीनगर में आयोजित 5वें अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन में नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति देवास को प्राप्त प्रशंसनीय नराकास का सम्मान, अध्यक्ष कार्यालय के रूप में नगर राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में बैंक नोट मुद्रणालय, देवास के योगदान एवं उपलब्धियों को रेखांकित करता है। 15 अक्तूबर 2025 को माननीय संसदीय समिति की तीसरी उपसमिति द्वारा बैंक नोट मुद्रणालय देवास के निरीक्षण पश्चात प्राप्त 'सर्वोत्कृष्ट प्रमाणपत्र' राजभाषा कार्यान्वयन में बीएनपी की सतत प्रतिबद्धता का परिचायक है।

गृह पत्रिकाओं के माध्यम से हम जहां संस्थान की गतिविधियों से परिचित होते हैं, वही कार्मिकों की सृजनात्मक प्रतिभा को मंच देने का भी कार्य करती है। मुझे पूरी आशा है कि **'मुद्रापथ'** पारस्परिक सहभागिता को सुदृढ़ करते हुए राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार को एक नई दिशा देगी। **'मुद्रापथ'** के इस आकर्षक अंक के रचनाकारों, संपादक एवं प्रकाशन से जुड़ी टीम को हार्दिक शुभकामना एवं साधुवाद।

(विजय रंजन सिंह)

सिक्योरिटी प्रिंटिंग एंड मिंटिंग कॉरपोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड
(भारत सरकार के पूर्ण स्वामित्वधीन)
Security Printing and Minting Corporation of India Limited
(Wholly owned by Government of India)

हिन्दी है जन-जन की अभिलाषा
50
स्वर्ण जयंती वर्ष

निदेशक (मानव संसाधन)
Director (Human Resource)

निदेशक (मानव संसाधन) की ओर से...

मुझे यह जानकर अति प्रसन्नता हो रही है कि बैंक नोट मुद्रणालय देवास द्वारा गृह पत्रिका **'मुद्रापथ'** का प्रकाशन किया जा रहा है। विगत कई वर्षों से गृहपत्रिका **'मुद्रापथ'** बैंक नोट मुद्रणालय, देवास के अधिकारियों एवं कर्मचारियों की अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम रही है। इस पत्रिका के माध्यम से इकाई की गतिविधियों से हमें कर्मचारियों की कार्यकुशलता और उनकी सृजनशीलता का भी परिचय मिलता है। बैंक नोट मुद्रणालय, देवास ने अपने गुणवत्तायुक्त एवं अद्यतन तकनीकों के माध्यम से उत्पादन के उच्चतम लक्ष्य को हासिल कर एक नया कीर्तिमान स्थापित किया है। अपने प्रतिभूति उत्पादों के माध्यम से एसपीएमसीआईएल को प्रगति के पथ पर निरंतर अग्रसर रखने में बैंक नोट मुद्रणालय, देवास का अत्यंत महत्वपूर्ण योगदान है।

बैंक नोट मुद्रणालय, देवास में स्थापना के दौर से ही राजभाषा कार्यान्वयन एवं प्रोत्साहन की समृद्ध परंपरा रही है, राजभाषा कार्यान्वयन हेतु भारत सरकार से इकाई को प्राप्त अनेकों अवार्ड इकाई की राजभाषा के प्रति सतत प्रतिबद्धताओं को रेखांकित करते है। अपनी इकाई में राजभाषा कार्यान्वयन के साथ-साथ बैंक नोट मुद्रणालय, देवास नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, देवास के अध्यक्ष कार्यालय के रूप में भी देवास नगर में स्थित केंद्र सरकार के समस्त कार्यालयों, बैंकों एव केन्द्रीय उपक्रमों में भी राजभाषा प्रचार प्रसार के अतिरिक्त दायित्व का भी निर्वहन कर रही है। सितंबर 2025 में गांधीनगर में आयोजित 5वें अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन में नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, देवास के अध्यक्ष एवं सचिव को प्राप्त प्रशंसनीय नराकास का सम्मान एवं प्रमाण पत्र हेतु बैंक नोट मुद्रणालय देवास के मुख्य महाप्रबंधक तथा प्रबन्धक (रा.भा.) को शुभकामना एवं बधाई। इसके साथ 15 अक्तूबर 2025 को माननीय संसदीय राजभाषा समिति की तीसरी उपसमिति के द्वारा सफल निरीक्षण के पश्चात बीएनपी द्वारा सर्वोत्कृष्ट प्रमाणपत्र प्राप्त करना भी अत्यंत सराहनीय उपलब्धि है।

गृह पत्रिका **'मुद्रापथ'** के नए अंक के प्रकाशन से जुड़े समस्त पदाधिकारियों एवं संपादक को बधाई एवं साधुवाद!

(सुनील कुमार सिन्हा)

सिक्योरिटी प्रिंटिंग एंड मिंटिंग कॉरपोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड
(भारत सरकार के पूर्ण स्वामित्वधीन)
Security Printing and Minting Corporation of India Limited
(Wholly owned by Government of India)

हिन्दी है जन-जन की अभिलाषा
स्वर्ण जयंती वर्ष

निदेशक (वित्त)
Director (Finance)

निदेशक (वित्त) की ओर से...

यह हर्ष का विषय है कि बैंक नोट मुद्रणालय देवास अपने निर्धारित दायित्वों के साथ इकाई एवं देवास शहर में स्थित केंद्र सरकार के कार्यालयों, उपक्रमों, स्वायत्त निकायों में भी नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (नराकास) के अध्यक्ष कार्यालय के रूप में राजभाषा के प्रचार-प्रसार हेतु निरंतर प्रयत्नशील रहा है। इस श्रंखला में इकाई की गृह पत्रिका **'मुद्रापथ'** का निरंतर प्रकाशन एक उल्लेखनीय प्रयास है।

वस्तुत: गृह पत्रिका इकाई के समस्त वर्ग के कर्मियों को बौद्धिक और भावनात्मक स्तर पर एक दूसरे से जुड़ने के लिए सेतु का कार्य करती है। इसमें प्रकाशित लेख, आलेख, कहानियां, कविताएं, आदि सामयिक, रोचक और ज्ञानवर्धक होते हैं। यह पत्रिका भारत सरकार के राजभाषा विभाग के दिशा-निर्देशों के अनुरूप राजभाषा हिन्दी का प्रचार प्रसार के साथ-साथ देवास इकाई के कर्मचारियों की साहित्यिक अभिरूचि एवं लेखन प्रतिभा को प्रदर्शित करने का उत्तम साधन है। इकाई की गतिविधियों से लेकर साहित्य की सभी विधाओं को अपने अंदर समेटे हुए यह रचनाशील कार्मिकों को एक सार्थक मंच प्रदान करती है। नराकास देवास के अध्यक्ष कार्यालय के रूप में सर्वोत्कृष्ट कार्यान्वयन हेतु प्रशंसनीय नराकास के प्रमाणपत्र हेतु बधाई साथ ही संसदीय राजभाषा समिति की तीसरी उपसमिति द्वारा इकाई के सफल निरीक्षण पश्चात प्राप्त उत्कृष्ट प्रमाणपत्र के लिए भी बीएनपी को बधाई एवं शुभकामनाएं।

मैं पुन: संपादक व प्रकाशन मण्डल को **'मुद्रापथ'** के नूतन अंक के प्रकाशन के लिए बधाई देता हूँ और आशा करता हूँ कि गृह पत्रिका **'मुद्रापथ'** कार्मिकों की रचनात्मकता बढ़ाने में सहायक सिद्ध होगी एवं राजभाषा के विस्तार के अपने उद्देश्य को प्राप्त करने में सफल होगी।

टी. नागराजन

(टी. नागराजन)

सिक्योरिटी प्रिंटिंग एंड मिंटिंग कॉरपोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड
(भारत सरकार के पूर्ण स्वामित्वधीन)
Security Printing and Minting Corporation of India Limited
(Wholly owned by Government of India)

सत्यमेव जयते

मुख्य सतर्कता अधिकारी
Chief Vigilance Officer

मुख्य सतर्कता अधिकारी की ओर से...

यह हर्ष का विषय है कि बैंक नोट मुद्रणालय, देवास अपने निर्धारित दायित्वों के साथ- साथ राजभाषा के प्रचार-प्रसार के लिए भी निरंतर प्रयत्नशील रहा है। इस श्रंखला में इकाई की गृह पत्रिका **'मुद्रापथ'** का निरंतर प्रकाशन एक उल्लेखनीय प्रयास है।

गृह पत्रिका इकाई के समस्त वर्ग के कार्मिकों को बौद्धिक और भावनात्मक सम्प्रेषण हेतु एक सार्थक मंच प्रदान करती है। पत्रिका में प्रकाशित लेख, आलेख, कहानियां, कविताएं, आदि सामयिक, रोचक और ज्ञानवर्धक होते हैं। यह पत्रिका भारत सरकार के राजभाषा विभाग के दिशा- निर्देशों के अनुरूप राजभाषा हिन्दी का प्रचार प्रसार के साथ-साथ देवास इकाई के कर्मचारियों की साहित्यिक अभिरूचि एवं लेखन प्रतिभा को मुखरित करने का उत्तम साधन है। देवास शहर में स्थित केंद्र सरकार के कार्यालयों, उपक्रमों, स्वायत निकायों में भी नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के अध्यक्ष कार्यालय के रूप में बीएनपी राजभाषा के प्रचार-प्रसार हेतु निरंतर प्रयत्नशील रहा है। बीएनपी की अध्यक्षता में नराकास देवास को प्रशंसनीय नराकास का सम्मान एवं प्रमाणपत्र प्राप्त करने के साथ-साथ माननीय संसदीय राजभाषा समिति के निरीक्षण में भी बी.एन.पी. द्वारा उत्कृष्ट प्रमाणपत्र प्राप्त करने हेतु हार्दिक शुभकामना एवं बधाई।

इकाई की गतिविधियों से लेकर साहित्य की सभी विधाओं को अपने अंदर समेटे हुये **'मुद्रापथ'** रचनाशील कार्मिकों को एक सार्थक मंच प्रदान करती है। मैं पुनः संपादन व प्रकाशन मण्डल को इस सराहनीय कार्य के लिए बधाई देता हूँ और आशा करता हूँ कि पत्रिका कर्मचारियों के मनोबल को बढ़ाने में सहायक सिद्ध होगी एवं राजभाषा के विस्तार के अपने उद्देश्य को प्राप्त करने में सफल होगी।

(रविन्द्र प्रताप सिंह)
आइ.ए.एस.

बैंक नोट प्रेस, देवास
सिक्योरिटी प्रिंटिंग एंड मिंटिंग कॉरपोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड की इकाई
(भारत सरकार के पूर्ण स्वामित्वधीन)
A Unit of Security Printing and Minting Corporation of India Limited
(Wholly owned by Government of India)

हिन्दी है जन-जन की अभिलाषा
50
स्वर्ण जयंती वर्ष

मुख्य महाप्रबंधक
Chief General Manager

संरक्षक की ओर से...

माँ चामुंडा की नगरी मे स्थित देश के गौरवशाली संस्थान बैंक नोट मुद्रणालय, देवास की गृह पत्रिका **'मुद्रापथ'** का नूतन अंक आप सभी साथियों एवं पाठकों को सौंपते हुये अंत्यन्त प्रसन्नता का अनुभव कर रहा हूँ। बैंक नोट मुद्रणालय, देवास भारत सरकार के लिए संप्रभु उत्पादनरत एक ऐसा प्रतिष्ठित संस्थान है जो इस बात के लिए सदैव प्रतिबद्ध रहा है कि इसका उत्पाद उच्च गुणवता के साथ निर्मित हो। टीम बीएनपी अपनी श्रमशीलता और उत्पादन बढ़ोतरी के संकल्प के साथ गत वर्ष की भांति इस वर्ष भी उत्पादन लक्ष्य प्राप्ति की ओर अग्रसर है। कारखाने के आधुनिकीकरण तथा गुणवत्ता पूर्ण उत्पादन में बढ़ोतरी हेतु इस वर्ष स्थापित नयी फिनिशिंग, ऑफसेट मशीनों से मुद्रण एवं In-house develop CSI ink से विविध श्रेणी के स्वनिर्मित सीएसआई स्याही का लगातार उत्पादन एवं आपूर्ति जारी है।

कारखाने के कार्मिकों को नियत समय में पदोन्नति एवं वित्तीय उन्नयन जारी किया जा चुका है। इसके साथ ही कारखाने के कार्मिकों के कल्याण हेतु निरंतर कदम उठाए गए है।

बीएनपी ना केवल उत्पादन में अग्रणी है वरण इतर गतिविधियों में भी अग्रणी है। जैसा कि विदित है कि इकाई मे राजभाषा प्रचार प्रसार के साथ बीएनपी के पास नगर राजभाषा समिति, देवास की भी अध्यक्षता है। दिनांक 14-16 सितंबर 2025 को गांधीनगर में आयोजित राजभाषा सम्मेलन में नराकास देवास को राजभाषा में सर्वोत्कृष्ट कार्यान्वयन हेतु सचिव राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार से 'प्रशंसनीय नराकास' का सम्मान एवं प्रमाणपत्र प्राप्त करना गौरवपूर्ण उपलब्धि रही। इसके साथ ही दिनांक 15 अक्टूबर 2025 को माननीय संसदीय समिति की तीसरी उपसमिति द्वारा बैंक नोट मुद्रणालय देवास के सफल निरीक्षण के पश्चात 'उत्कृष्ट कार्यान्वयन का प्रमाणपत्र' गौरवान्वित करता है एवं टीम बीएनपी की राजभाषा के प्रति प्रतिबद्धता को रेखांकित करता है। गृह पत्रिका इकाई की गतिविधियों का दर्पण होती है, मुझे खुशी है, इकाई के कार्मिक एवं अधिकारीगण अपने सृजनात्मक लेखन के माध्यम से **'मुद्रापथ'** को इसी तरह रोचक एवं पठनीय बनाए रखेंगे। मुद्रापथ के सफल प्रकाशन एवं सम्पादन से जुड़े सम्पूर्ण टीम को बधाई एवं साधुवाद।

(केदारनाथ महापात्र)

बैंक नोट प्रेस, देवास

सिक्योरिटी प्रिंटिंग एंड मिंटिंग कॉरपोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड की इकाई
(भारत सरकार के पूर्ण स्वामित्वधीन)
A Unit of Security Printing and Minting Corporation of India Limited
(Wholly owned by Government of India)

हिन्दी है जन-जन की अभिलाषा
50
स्वर्ण जयंती वर्ष

अपर महाप्रबंधक एवं कारखाना प्रबंधक
AGM & Factory Manager

सह संरक्षक की ओर से...

बैंक नोट मुद्रणालय, देवास की गृह पत्रिका **'मुद्रापथ'** का नवीन अंक आपके सामने है। आज की वैश्विक अर्थव्यवस्था में हिन्दी भाषा के महत्व को और उजागर किया है क्योंकि कंपनियों के उत्पादों का उपभोग आम जनमानस करता है एवं हिन्दी आम जनमानस की भाषा है। अत: देश के सर्वांगीण विकास यानि समाज के उच्च से निचले स्तर तक विकास की धारा की पहुँच हेतु आवश्यक है कि सभी आम-जन की लोकप्रिय भाषा हिन्दी का सरलता से प्रयोग करें।

दिनांक 14-16 सितंबर 2025 को गांधीनगर में आयोजित राजभाषा सम्मेलन में नराकास देवास को राजभाषा में सर्वोत्कृष्ट कार्यान्वयन हेतु सचिव राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार से 'प्रशंसनीय नराकास' का सम्मान एवं प्रमाणपत्र के साथ-साथ दिनांक 15 अक्टूबर 2025 को माननीय संसदीय समिति की तीसरी उपसमिति द्वारा बैंक नोट मुद्रणालय, देवास के सफल निरीक्षण हेतु उत्कृष्ट कार्यान्वयन प्रमाणपत्र प्राप्ति की दोहरी ऐतिहासिक उपलब्धि हेतु बधाई एवं शुभकामना। गृह पत्रिका राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार का महत्वपूर्ण माध्यम होती है। मुझे खुशी है कि इकाई की गृह पत्रिका **'मुद्रापथ'** वर्षों से राजभाषा हिन्दी के प्रसार के साथ कार्मिकों की साहित्यिक प्रतिभा विकसित करने का माध्यम रही है। गृह पत्रिका के माध्यम से इकाई में कार्यरत कार्मिकों को उत्पादन या अन्य तकनीकी कार्यों के साथ-साथ अपनी रचनात्मक प्रतिभा दिखाने का अवसर मिलता है। साथ ही साथ पत्रिका संस्थान की गतिविधियों को परिलक्षित करने का भी एक अच्छा माध्यम है।

अंत में, मैं **'मुद्रापथ'** से जुड़े सभी रचनाकारों एवं कार्मिकों को हार्दिक बधाई देता हूँ तथा पत्रिका के सफल संपादन के लिए संपादक को बधाई एवं शुभकामना!

(एस एस राठौर)

भारत सरकार / Govt. of India
गृह मंत्रालय / Ministry of Home Affairs,
राजभाषा विभाग / Department of Official Language
क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय (मध्य), भोपाल
Regional Implementation Office (Central), Bhopal
52,ए, निर्माण सदन, कमरा नं. 206, द्वितीय तल, अरेरा हिल्स भोपाल – 462 011 (मध्य प्रदेश)
52,A, Nirman Sadan, Room No.206, Second Floor, Arera Hills, Bhopal - 462 011 (Madhya Pradesh)

उपनिदेशक, (कार्यान्वयन) एवं कार्यालयाध्यक्ष
Dy Director, RIO, Bhopal

क्षेत्रीय उपनिदेशक की ओर से...

बैंक नोट मुद्रणालय की गृह पत्रिका **'मुद्रापथ'** के माध्यम से आप सभी से संवाद करते हुए मुझे हार्दिक प्रसन्नता हो रही है। वस्तुतः गृह पत्रिका एक ऐसा सशक्त मंच है, जिसके माध्यम से कार्मिकों की प्रसुप्त रचनात्मक प्रतिभा और लेखन कौशल को अभिव्यक्ति मिलती है। मानवीय संवेदनाओं और अनुभवों को शब्दों में पिरोना एक चुनौतीपूर्ण कार्य है, जिसे अपनी मातृभाषा और राजभाषा के माध्यम से ही पूर्णता प्रदान की जा सकती है।

बैंक नोट मुद्रणालय में कार्यरत समस्त अधिकारी, कर्मचारी और उनके परिजन बधाई के पात्र हैं। आपके द्वारा न केवल मुद्रा उत्पादन के क्षेत्र में नए कीर्तिमान स्थापित किए जा रहे हैं, बल्कि तकनीकी परिवेश में भी राजभाषा हिंदी को गौरवपूर्ण स्थान दिलाकर उसे निरंतर प्रतिष्ठित किया जा रहा है।

आपके संस्थान के राजभाषा अनुभाग द्वारा भारत सरकार की राजभाषा नीति के अनुपालन हेतु किए जा रहे प्रयास अत्यंत सराहनीय है। दिनांक 15 सितंबर 2025 को गांधीनगर राजभाषा सम्मेलन में सचिव, राजभाषा विभाग द्वारा नराकास देवास को 'प्रशंसनीय' नराकास श्रेणी में सम्मानित किया जाना और तत्पश्चात 15 अक्टूबर 2025 को माननीय संसदीय राजभाषा समिति की तीसरी उपसमिति द्वारा बैंक नोट मुद्रणालय के सफल निरीक्षण के उपरांत 'उत्कृष्ट प्रमाण-पत्र प्रदान किया जाना, आपकी पूरी टीम की निष्ठा और कठिन परिश्रम का प्रतिफल है। मुख्य महाप्रबंधक महोदय के कुशल नेतृत्व में राजभाषा के क्षेत्र में प्राप्त ये उपलब्धियां अन्य संस्थानों के लिए भी एक प्रेरक उदाहरण है।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि बैंक नोट मुद्रणालय, देवास इसी ऊर्जा के साथ अपने कार्यालय के साथ-साथ नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, देवास में भी हिंदी के प्रचार-प्रसार में अपना बहुमूल्य योगदान जारी रखेगा।

अंत में, गृह पत्रिका **'मुद्रापथ'** के सुरुचिपूर्ण एवं सफल संपादन हेतु मेरी ओर से संपादक मण्डल, राजभाषा अनुभाग, रचनाकारों एवं समस्त पाठकों को हार्दिक शुभकामनाएँ।

''मुद्रा की शुद्धता, राष्ट्र का आधार; **'मुद्रापथ'** से बढ़ रहा, हिंदी का व्यवहार।''

(नरेन्द्र सिंह मेहरा)

बैंक नोट प्रेस, देवास
सिक्योरिटी प्रिंटिंग एंड मिंटिंग कॉरपोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड की इकाई
(भारत सरकार के पूर्ण स्वामित्वधीन)
A Unit of Security Printing and Minting Corporation of India Limited
(Wholly owned by Government of India)

हिन्दी है जन-जन की अभिलाषा
50
स्वर्ण जयंती वर्ष

प्रबंधक (राजभाषा)
Manager (O.L.)

संपादक की ओर से...

गुलाबी ठंड के जाने का प्रथम संकेत ऋतुराज वसंत अपनी आगमन के साथ प्रकृति के यौवन का शृंगार के माध्यम से यथा पेड़ो पर उगते नव पल्लवों, रंग बिरंगे फूलों, भौरों की गुनगुन एवं कोयल की सुरीली कूक, नाचते मयूरों खेतों मे लहराती नयी फसलों, एवं मदमस्त हवाओं के माध्यम से दे देते है। दैनिक आपाधापी, भागम-भाग से परे उत्साह एवं उल्लास से भरे बसंत पंचमी, लोहरी, होली, रंगपंचमी जैसे ये पर्व एवं त्योहार हमें मौका देते है कि हम सभी अपने परिवार एवं दोस्तों के साथ सब कुछ भूल कर हर्ष एवं उल्लास के खूबसूरत पलों का आनंद उठाए। उल्लास से भरे इन पलों में **'मुद्रापथ'** के नुतन अंक के माध्यम से आप सुधी पाठको से संवाद स्थापित करते हुये मुझे अत्यंत प्रसन्नता हो रही है।

उज्जैन के चक्रवर्ती सम्राट विक्रमादित्य एवं महाकाल की आध्यात्मिक एवं सांस्कृतिक नगरी जिसके नवरत्न संस्कृत साहित्य केमहाकवि कालिदास, खगोलवेत्ता वराह मिहिर थे एवं देवी अहिल्याबाई के सांस्कृतिक विरासत को सँजोती इंदौर इन दोनों नगरों के बीच स्थित देवास (यानि देवी या देवो का वास) नाम के अनुरूप माँ तुलजा भवानी के ममता भरी छांव में स्थित बीएनपी में प्रारम्भ से ही राजभाषा हिन्दी के प्रति उत्साह एवं अपनत्व का माहौल रहा है, इसमें वर्षो पहले स्थापित विविध समितियों यथा राजभाषा कार्यान्वयन समिति, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति देवास, के साथ प्रतिवर्ष आयोजित होने वाले कार्यक्रमों यथा हिन्दी पखवाड़ा, विविध संगोष्ठियों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है, इस वर्ष 15 सितंबर 2025 को राजभाषा विभाग भारत सरकार द्वारा गांधी नगर राजभाषा सम्मेलन में अध्यक्ष नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, देवास को प्राप्त प्रशंसनीय नराकास का ऐतिहासिक सम्मान हमें गर्व से भर देता है, विदित है, नराकास देवास की अध्यक्षता बैंक नोट प्रेस देवास के पास है। इसके साथ-साथ अक्टूबर 2025 में माननीय संसदीय समिति द्वारा बीएनपी के सफल निरीक्षण के पश्चात 'उत्कृष्ट प्रमाण पत्र' प्रदान करके हमें दोहरी खुशी दी है।

बैंक नोट प्रेस देवास अपनी स्थापना के 53 वर्षों का स्वर्णिम कालखंड पूरा कर चुका है,साथ ही हमारा एसपीएमसीआईएल निगम भी अपनी स्थापना के 30वें वर्ष में प्रवेश कर चुका है, करेंसी मुद्रण के क्षेत्र में स्वदेशीकरण एवं आत्म निर्भरता के उदेश्य से वर्षों पहले स्थापित बीएनपी ने अपने स्वर्णिम सफर में एसपीएमसीआईएल निगम की शीर्ष प्रबंधन की दूरगामी नीतियों तथा अधतन तकनीकों को अपनाते हुये अत्याधुनिक सुरक्षा मानक, विविध मूल्यवर्ग के बैंक नोटो के मुद्रण के साथ-साथ अत्याधुनिक मानकों पर आधारित विशिष्ट सीएसआई सुरक्षा स्याही के गुणवत्तापूर्ण उत्पादन के क्षेत्र में तेजी से प्रगति करते हुये शीर्ष की ओर अग्रासर है, यह चमत्कारिक बदलाव अत्याधुनिक तकनीकों, नयी मशीनों, प्रशिक्षित एवं समर्पित कार्यबल के माध्यम से संभव हो पाया है, जिसका प्रतिफल आज प्रतिवर्ष गुणवत्तापूर्ण उत्पादन के रूप में सामने है।

'मुद्रापथ' के इस नूतन अंक में नियमित स्तंभों के साथ-साथ विविध रचनाओं आदि को समाहित किया गया है। आपके सुझाव एवं प्रतिक्रियायें हमेशा सुधार एवं कुछ नया करने हेतु प्रेरित करती आयी है, जिसका हम बेसब्री से इंतजार करते है। नूतन वर्ष की शुभकामनाओं के साथ।

(देवेन्द्र तिवारी)

बिज़नेस फाइनेंस क्या है?

बिज़नेस फाइनेंस में अपने उद्देश्यों को प्राप्त करने और लाभ को अधिकतम करने के लिए कंपनी के फाइनेंशियल संसाधनों का मैनेजमेंट शामिल है। इसमें बजट बनाना, पूर्वानुमान देना, इन्वेस्ट करना और उधार लेना जैसी कई गतिविधियां शामिल हैं. बिज़नेस फाइनेंस का प्राथमिक लक्ष्य यह सुनिश्चित करना है कि कंपनी के पास कुशलतापूर्वक संचालन करने और स्थायी रूप से बढ़ाने के लिए पर्याप्त फंड हैं। इसमें संसाधनों को आवंटित करने, जोखिमों को मैनेज करने और भविष्य की फाइनेंशियल आवश्यकताओं के लिए प्लान करने के बारे में रणनीतिक निर्णय लेना शामिल है। लिक्विडिटी बनाए रखने, पूंजी संरचना को अनुकूल बनाने और समग्रा फाइनेंशियल परफॉर्मेंस को बढ़ाने के लिए प्रभावी बिज़नेस फाइनेंस प्रैक्टिस महत्वपूर्ण हैं।

किसी भी कंपनी के जीवित रहने और विकास के लिए बिज़नेस फाइनेंस महत्वपूर्ण है। यह सुनिश्चित करता है कि किसी बिज़नेस के पास अपने ऑपरेशनल खर्चों को पूरा करने, नए अवसरों में निवेश करने और फाइनेंशियल अनिश्चितताओं को पूरा करने केलिए आवश्यक फंड हैं। सही फाइनेंशियल मैनेजमेंट बिज़नेस हेतु उचित निर्णय लेने, लाभ में सुधार करने और लॉन्ग-टर्म लक्ष्यों को प्राप्त करने में मदद करता है। यह कंपनियों को स्वस्थ कैश फ्लो बनाए रखने, क़र्ज़ को मैनेज करने और संसाधनों को कुशलतापूर्वक आवंटित करने में भी सक्षम बनाता है। अपने फाइनेंस को समझऔर नियंत्रित करके बिज़नेस अपने संचालन को अनुकूल बना सकते हैं, लागत को कम कर सकते हैं और मार्केट में अपने प्रतिस्पर्धी लाभ को बढ़ा सकते हैं।

कंपनी की सफलता के लिए सही **बिज़नेस फाइनेंस के स्रोतों** की पहचान करना महत्वपूर्ण है। इन स्रोतों को व्यापक रूप से आंतरिक और बाहरी विकल्पों में वर्गीकृत किया जा सकता है। आंतरिक स्रोतों में पूर्वशेष सेवानिवृत्त आय और एसेट सेल्स शामिल हैं, जबकि बाहरी स्रोतों में लोन, इक्विटी फाइनेंसिंग और अनुदान शामिल होते हैं। प्रत्येक स्रोत की लाभ और कमियां होती हैं, और बिज़नेस को अपनी फाइनेंशियल ज़रूरतों, लक्ष्यों और परिस्थितियों के आधार पर सबसे उपयुक्त विकल्प चुनना चाहिए. बिज़नेस फाइनेंस के विभिन्न स्रोतों को समझने से कंपनियों को अपनी फंडिंग को रणनीतिक रूप से प्लान करने और फाइनेंशियल स्थिरता सुनिश्चित करने में मदद मिलती है।

बिज़नेस फाइनेंस को फंड की अवधि और उद्देश्य केआधार पर विभिन्न प्रकारों में वर्गीकृत किया जाता है। इनमें शॉर्ट-टर्म फाइनेंस, लॉन्ग-टर्म फाइनेंस और प्रोजेक्ट फाइनेंस शामिल हैं। यह सुनिश्चित करता है कि बिज़नेस के पास संचालन और विकास केलिए आवश्यक संसाधन हैं। इन प्रकारों को समझने से बिज़नेस को अपनी फाइनेंशियल रणनीतियों को प्रभावी रूप से प्लान करने में मदद मिलती है।

बिज़नेस की सफलता के लिए फाइनेंस को प्रभावी रूप से मैनेज करना महत्वपूर्ण है। एक कम्प्रीहेंसिव बजट बनाकर शुरू करें जो अपेक्षित आय और खर्चों की रूपरेखा देता है। लिक्विडिटी सुनिश्चित करने और किसी भी विसंगति को तुरंत संबोधित करने केलिए नियमित रूप से कैश फ्लो की निगरानी करें। सटीक फाइनेंशियल रिकॉर्ड रखने के लिए मज़बूत अकाउंटिंग प्रैक्टिस को लागू करें। प्रोसेस को सुव्यवस्थित करने और रियल-टाइम इनसाइट प्राप्त करने के लिए फाइनेंशियल मैनेजमेंट सॉफ्टवेयर में निवेश करें। टैक्स के लिए प्लान करें और

उसके अनुसार फंड अलग रखें। आवश्यक होने पर प्रोफेशनल सलाह प्राप्त करें और बिज़नेस के लक्ष्यों और मार्केट की स्थितियों के अनुरूप अपनी फाइनेंशियल स्ट्रेटजी को निरंतर रिव्यू करें और एडजस्ट करें।

अंत में, संचालन को बनाए रखने, विकास प्राप्त करने और फाइनेंशियल स्थिरता प्राप्त करने के लिए बिज़नेस फाइनेंस का प्रभावी मैनेजमेंट आवश्यक है। बिज़नेस फाइनेंस के विभिन्न स्रोतों का उपयोग करना जैसे इक्विटी फाइनेंसिंग, डेट फाइनेंसिंग, इंटरनल और एक्सटर्नल स्रोतों, बिज़नेस को अपनी फंडिंग आवश्यकताओं को रणनीतिक रूप से पूरा करने में सक्षम बनाता है. चाहे तत्काल आवश्यकताओं के लिए शॉर्ट-टर्म फाइनेंस के माध्यम से, ग्रोथ के लिए लॉन्ग-टर्म फाइनेंस या विशिष्ट उद्यमों केलिए प्रोजेक्ट फाइनेंस, बिज़नेस फाइनेंस को समझना और मास्टर करना महत्वपूर्ण है। व्यावहारिक सुझावों का उपयोग करना और लगातार फाइनेंशियल मैनेजमेंट पद्धतियों को सुधारना यह सुनिश्चित करेगा कि बिज़नेस प्रतिस्पर्धी बने रहें और लंबे समय तक आगे बढ़ेंगे। अतिरिक्त फंड चाहने वाले लोगों के लिए, **बिज़नेस लोन** एक प्रभावी समाधान हो सकता है।

विवेक सिंह
संयुक्त महाप्रबंधक (वित्त एवं लेखा) एवं कार्यालय प्रमुख

दरवाजा, दीवारें और छत

आज सुबह पैदल घूमते हुए उन्हें रोना आ रहा था। अभी कुछ देर पहले बेटे की कर्कश आवाज उन्हें बेचैन किए हुए था। कुछ दिन पहले मित्र दिलीप के आगे अपने अकेलेपन की बात की तो चार लोगों के बीच बोले उसके शब्द उनके कानों में पड़ ही गए थे- 'ये राजेंद्र तो कायर ही है यार! जब देखो तब रोता ही रहता है।'

छह बरस पहले बीमारी के कारण पत्नी का निधन हुआ था तब व्यथित होकर वे बड़े भाई के गले लगकर वे रोने ही लगे थे कि उसने भी फटकार दिया था- अबे क्या औरतों जैसा रोता है? वो तो वैसे ही जाने वाली थी। उसे तो मुक्ति मिल गई। रोना बंद कर और मजबूत बन।'

फिर वे मजबूत बन गए थे। माँ और इकलौती बेटी के जाने पर भी रोए नहीं। लेकिन बरसों से अकेले रहते हुए आज जब विदेश में सेटल बेटे को फोन लगाया तो बोलते-बोलते रुलाई फूट ही पड़ी थी जिसे बेटा उल्टे बरस ही पड़ा था- 'पापा, अभी तो ऑफिस में आया हूँ। क्या रो- धोकर जब-तब इमोशनली ब्लेकमेल करते रहते हो?'

तभी एक मकान के अंदर से कुछ लोगों के जोर-जोर से हँसने की आवाजें आईं तो वे वर्तमान में लौटे। उमड़- घुमड़ आए आंसुओं को रोका और चौंक कर उधर देखा, बाहर लिखा था- लॉफिंग क्लब।

लॉफिंग क्लब वा!' वे बुदबुदाए, 'जैसे लॉफिंग क्लब होते हैं वैसे वीपिंग क्लब, क्राइंग क्लब क्यों नहीं बनते हमारे यहां? जहां रोने पर इंसान को कोई रोके-टोके नहीं, कोई कायर न कहे, कोई मजाक न बनाए। वीपिंग क्लब, जहां वह खुलकर रो सके, अपने मन का सारा गुबार निकाल सके।' सोचते-सोचते वे घर आ गए और दरवाजा बंद कर फूट-फूट कर रोने लगे। उन्हें पता था दरवाजा, दीवारें और छत उनका, उनके रोने का कभी मजाक नहीं उड़ाएंगे।

फूलवती अलावा
पर्यवेक्षक (मा. सं)

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के युग मे साइबर सुरक्षा की चुनौतिया

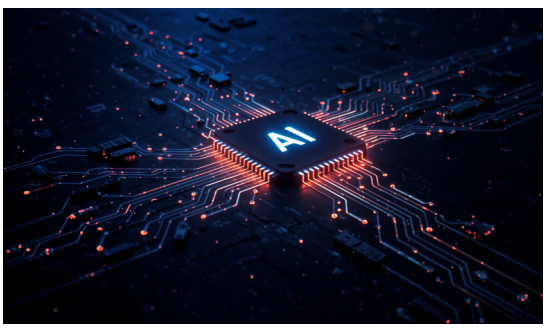

* आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (ए.आई.) के उदय ने स्वास्थ्य सेवा और वित्त से लेकर मनोरंजन और परिवहन तक हमारे जीवन के कई पहलुओं में क्रांति ला दी है। हालाँकि, यह प्रौद्योगिकीय उन्नति नई चुनौतियों को भी सामने लाती है, विशेषकर साइबर सुरक्षा के क्षेत्र में।
* भारत का डिजिटल परिदृश्य तेजी से विकसित हो रहा है और इंटरनेट उपयोगकर्ताओं की संख्या 800 मिलियन से अधिक हो गई है, हालाँकि इस विकास में दुर्भावनापूर्ण कार्य करने वाले भी पनप रहें हैं, जो महत्त्वपूर्ण बुनियादी ढाँचे और व्यक्तिगत डाटा का फायदा उठाते हैं।
* केवल वर्ष 2025 में भारत में कई महत्पूण संस्थानों में साइबर हमले हुए जो मजबूत साइबर सुरक्षा उपायों की तात्कालिकता को उजागर करते हैं।

ए.आई. संचालित खतरे

* साइबर सुरक्षा में ए.आई. का एकीकरण अवसर और कठिनाइयाँ दोनों प्रस्तुत करता है। एक ओर, ए.आई. खतरे का पता लगा सकता है और प्रतिक्रिया को स्वचालित कर सकता है, विसंगतियों की पहचान करने के लिए बड़ी मात्रा में डाटा का विश्लेषण कर सकता है और यहाँ तक कि भविष्य के हमलों की भविष्यवाणी भी कर सकता है।
* हालाकि, एआई-संचालित टूल का उपयोग हमलावरों द्वारा परिष्कृत साइबर हमले शुरू करने, सोशल इंजीनियरिंग के लिए डीपफेक बनाने और मैलवेयर विकास को स्वचालित करने के लिए किया जा सकता है।
* भारत के लिए अन्य विशिष्ट चुनौतियाँ: भारत को अपने विशिष्ट सामाजिक-आर्थिक संदर्भ के कारण कई अन्य विशिष्ट साइबर सुरक्षा चुनौतियों का सामना करना पड़ता है:

  व्यापक डिजिटल विभाजन: आबादी के एक महत्त्वपूर्ण हिस्से के पास डिजिटल साक्षरता और जागरुकता का अभाव है जिससे वे फिशिंग हमलों और ऑनलाइन घोटालों के शिकार हो जाते हैं।

  खंडित साइबर सुरक्षा बुनियादी ढाँचा: साइबर सुरक्षा की जिम्मेदारी अक्सर विभिन्न सरकारी एजेंसियों और निजी संस्थाओं को दी जाती है जिससे समन्वय और व्यापक रणनीतियों की कमी होती है।

  डाटा गोपनीयता संबंधी चिंताएँ: डाटा सुरक्षा और व्यक्तिगत जानकारी का संभावित दुरुपयोग डिजिटल भुगतान के लिए चिंता का कारण हो सकता है।

  कौशल की कमी: भारत को योग्य साइबर सुरक्षा पेशेवरों की कमी का सामना करना पड़ रहा है जिससे प्रभावी खतरे का पता लगाने और प्रतिक्रिया क्षमताओं में बाधा आ रही है।

चुनौतियों का समाधान करना

* **अनुसंधान और विकास में निवेश:** सुरक्षित ए.आई. समाधानों के अनुसंधान और विकास में निवेश करना महत्त्वपूर्ण है।

इसमें सी.ई.आर.टी. इन जैसी सरकारी योजनाओं को मजबूत बनाना, सार्वजनिक-निजी भागीदारी को बढ़ावा देना और हितधारकों के बीच सहयोग को बढ़ावा देना शामिल है।

- **जनता को शिक्षित करना:** एक लचीले डिजिटल समाज के निर्माण के लिए साइबर स्वच्छता, ऑनलाइन घोटालों और डाटा गोपनीयता प्रथाओं केबारे में जनता को शिक्षित करना आवश्यक है।

  प्रशिक्षण कार्यक्रम प्रदान करके और क्षेत्र में प्रतिभा को आकर्षित करके कौशल की कमी को दूर करना दीर्घकालिक साइबर सुरक्षा तैयारियों के लिए आवश्यक है।

- **सुरक्षित बुनियादी ढाँचे का विकास:** भारत को साइबर अपराधों को रोकने, महत्त्वपूर्ण बुनियादी ढाँचे की रक्षा करने और डाटा गोपनीयता सुनिश्चित करने के लिए मजबूत साइबर सुरक्षा कानूनों और विनियमों की आवश्यकता है।

- **अंतरराष्ट्रीय सहयोग:** दुरुपयोग और पूर्वाग्राह को रोकने के लिए पारदर्शिता, जवाबदेही और मानवीय निरीक्षण महत्त्वपूर्ण हैं।

  सीमा पार से आने वाले साइबर खतरों से निपटने के लिए अंतरराष्ट्रीय सहयोग आवश्यक है।

  जानकारी साझा करने, सर्वोत्तम अभ्यास और विशेषज्ञता से वैश्विक साइबर सुरक्षा तैयारी मजबूत होगी।

ए.आई. इंटीग्रेशन पर ध्यान केंद्रित करना

साइबर सुरक्षा समाधानों में ए.आई. को जिम्मेदारी से एकीकृत करना भारत के लिए गेम चेंजर हो सकता है। यहाँ फोकस के कुछ प्रमुख क्षेत्र दिए गए हैं।

- **खतरे का पता लगाना और प्रतिक्रिया:** ए.आई. संचालित सिस्टम वास्तविक समय में विसंगतियों और संभावित खतरों की पहचान करने के लिए नेटवर्क ट्रैफिक, उपयोगकर्ता व्यवहार और सिस्टम लॉग का विश्लेषण कर सकता है, जिससे तेजी से प्रतिक्रिया समय सक्षम हो सकता है और क्षति को कम किया जा सकता है।

- **भेद्यता प्रबंधन:** ए.आई. भेद्यता स्कैनिंग और पैचिंग को स्वचालित कर सकता है, यह सुनिश्चित करते हुए कि सिस्टम लगातार अपडेट होते हैं और ज्ञात खतरों से सुरक्षित रहते हैं।

- **धोखाधड़ी की रोकथाम:** ए.आई. वित्तीय लेनदेन का विश्लेषण कर सकता है और ऑनलाइन धोखाधड़ी और वित्तीय चोरी को रोकने के लिए संदिग्ध पैटर्न की पहचान कर सकता है।

- **साइबर अपराध जांच:** ए.आई. साइबर अपराध जांच में सुधार के लिए फोरेंसिक डाटा का विश्लेषण करने, हमलावरों की पहचान करने और भविष्य के हमले के पैटर्न की भविष्यवाणी करने में सहायता कर सकता है।

कार्रवाई के लिए आह्वान

ए.आई. के युग में साइबर सुरक्षा के लिए सामूहिक प्रयास की आवश्यकता है। सरकारी, निजी क्षेत्र, शिक्षा जगत और नागरिक समाज को एक मजबूत साइबर सुरक्षा पारिस्थिति की तंत्र बनाने, जिम्मेदार ए.आई. विकास को बढ़ावा देने और व्यक्तियों को डिजिटल दुनिया में सुरक्षित रूप से नेविगेट करने के लिए और सशक्त बनाने के लिए एक साथ आना चाहिए।

निष्कर्ष

ए.आई. के युग में साइबर सुरक्षा एक जटिल चुनौती है लेकिन सक्रिय रूप से कठिनाइयों का समाधान करके और अवसरों का लाभ उठाकर, भारत अपने नागरिकों के लिए एक सुरक्षित और अनुकूलित डिजिटल भविष्य सृजित कर सकता है और एक सुरक्षित वैश्विक डिजिटल परिदृश्य में योगदान दे सकता है।

योगेन्द्र भदानिया
संयुक्त महाप्रबंधक (सू.प्रौ.)

जागरूक समाज, बेहतर कल

(सत्य घटना पर आधारित)

जिस बात का अंदेशा था पहले ही दिन से वही सामने आया है पत्नी ने ही पति की हत्या करवाई और खुद गायब हो गई।

जब आप अपने बेटे या बेटी के लिए रिश्ता तय करें, तो सिर्फ चेहरा न देखें, कैसे माहौल के परवरिश हुई है ये भी देखें। कई बार चालाक मां बाप अपनी संतान की असलियत जानते हुए भी सिर्फ जिम्मेदारी से पीछा छुड़ाने और बोझ उतारने के लिए उसकी शादी कर देते हैं और इस तरह अपनी ज़िम्मेदारी किसी और के परिवार पर थोप देते हैं।

> "जब आप अपने बेटे या बेटी के लिए रिश्ता तय करें, तो सिर्फ चेहरा न देखें, कैसे माहौल में परवरिश हुई है? ये भी देखें।"

राजा रघुवंशी के मां बाप ने शायद यही गलती की, सोनम के मां बाप पर भरोसा करके, जिसका खामियाजा राजा ने अपनी जान देकर भुगता। सोनम की कहानी अब सिर्फ एक नाम नहीं, एक चेतावनी है उन लोगों के लिए जो जाने अनजाने किसी और का ज़हर अपनी जिंदगी और परिवार में ले आते हैं।

ये ज़माना अब वो नहीं रहा जहां 'अच्छे घर का रिश्ता है कह देने भर से रिश्ता मुकम्मल हो जाए। आज रिश्तों की नींव में अगर तथ्यों और असलियत को छिपाना, झूठ, छल और स्वार्थ छुपा हो, तो वो शादी नहीं, फाँसी का फंदा बन जाती है।

राजा रघुवंशी जैसे बेटे, जो अपने मां-बाप के कहने पर रिश्ता निभाने निकलते हैं। कभी किसी साज़िश में बेमौत मारे जाते हैं, तो कभी किसी और की चाहत की सज़ा, उम्रभर तन्हाई और तिल-तिल मरने के रूप में भुगतते हैं।

रिश्ता पक्का करने से पहले दिल से नहीं, होश से सोचिए।

- लड़के लड़की की सोच, उसका व्यवहार, उसके अतीत, रिश्ते के लिए उसकी सहमति और नीयत - सब कुछ जांचिए।
- एक नहीं, सौ बार मिलिए ज़रूरत पड़े तो बैकग्राउंड वेरिफिकेशन कराइए।
- लोग क्या कहेंगे से ज्यादा जरूरी है, आपकी औलाद।

मौत के घाट उतारना चाहते हैं या फिर जिंदा लाश बनाना चाहते हैं, निर्णय आपका है कि अगर आप आंख मूंद कर रिश्ता करेंगे, तो या तो बेटा श्मशान पहुंच जाएगा, या फिर ज़िंदगी भर एक धोखे के साथ जीने को मजबूर रहेगा। प्यार, शादी, रिश्ता - सब कुछ तभी सुंदर है जब उसमें सच्चाई हो। वरना ये सबसे ख़तरनाक छलावा है। अब वक़्त आ गया है - सिर्फ अच्छे रिश्तेदार नहीं, अच्छे इंसान ढूंढने का, वरना घर बसने से पहले ही उजड़ जाएगा।

मेघालय की शांत और हरी-भरी वादियों में, जहाँ प्रकृति की गोद में प्रेम और सपनों की कहानियाँ लिखी जानी चाहिए थीं, एक ऐसी त्रासदी घटी जिसने न केवल एक परिवार, बल्कि पूरे समाज को झकझोर कर रख दिया। राजा रघुवंशी और सोनम रघुवंशी, इंदौर के सहकार नगर के एक नवविवाहित जोड़े की कहानी, जो 11 मई 2025 को शादी के बंधन में बंधे थे, भयावह हत्याकांड में बदल गई। यह घटना केवल एक अपराध की कहानी नहीं है; यह हमारे समाज की उन गहरी दरारों को उजागर करती है, जो रिश्तों, विश्वास, और नैतिकता को खोखला कर रही हैं। इसके साथ ही, यह हमें उस नफरत पर भी सोचने के लिए मजबूर करती है, जो लोगों के बीच, यहाँ तक कि अपने ही अपनों के बीच, पनप रही है। .या यह नफरत, जो हमें एक-दूसरे से अलग कर रही है, कहीं हमारे लिए आत्मघाती तो नहीं साबित हो रही?

यह केस केवल एक हत्या की कहानी नहीं है। यह हमारे समाज की उन सच्चाइयों को उजागर करता है, जिन्हें हम अक्सर नजर अंदाज कर देते हैं। यह रिश्तों में टूटते विश्वास, सामाजिक दबावों और व्यक्तिगत इच्छाओं के बीच बढ़ते तनाव की कहानी है। लेकिन इसके साथ ही, यह उस नफरत की भी कहानी है, जो हमारे बीच धीरे-धीरे जहर की तरह फैल रही है। यह नफरत, जो व्यक्तिगत असहमति, कुंठाओं या अनकही पीड़ा से उपजती है, हमारे रिश्तों को नष्ट कर रही है। क्या यह नफरत जो हमें अपने ही अपनों से घृणा करने के लिए मजबूर कर रही है, इस त्रासदी का एक छिपा हुआ कारण हो सकती है?

आम लोगों से सवाल:

* क्या आपने कभी सोचा है कि हमारे बीच पनप रही नफरत का असर हमारे निजी रिश्तों पर भी पड़ रहा है? क्या आप अपने आसपास नफरत भरी बातों को रोकने की कोशिश करते हैं, या आप उसे अनदेखा कर देते हैं?
* अगर सोनम ने सामाजिक दबावों या नफरत के कारण यह कदम उठाया, तो क्या हमारा समाज इसके लिए जिम्मेदार नहीं है? आप अपने परिवार में ऐसी खुली बातचीत को बढ़ावा देते हैं, जहाँ कोई अपनी कुंठाएँ या नाराजगी को बिना डर के व्यक्त कर सके ?
* क्या आप मानते हैं कि नफरत का यह जहर हमें अपने ही अपनों से दूर कर रहा है? आप खुद इस नफरत को कम करने के लिए क्या कर रहे हैं- क्या आप अपने बच्चों को सहानुभूति और समझदारी सिखाते हैं?
* जब आप ऐसी खबरें पढ़ते हैं, तो क्या आप सिर्फ़ अपराधी को जज करते हैं, या आप यह सोचते हैं कि समाज की नफरत और दबावों ने उस व्यक्ति को इस हद तक पहुँचाया? आप इस नफरत को खत्म करने के लिए क्या कदम उठा सकते हैं?

क्या आप मानते हैं कि सोशल मीडिया पर फैल रही जहरीली टिप्पणियाँ और नफरत भरी बातें ऐसी घटनाओं को और बढ़ावा दे रही हैं? आप ऐसी सामग्री को देखकर क्या करते हैं- उसे अनदेखा करते हैं, या उसे चुनौती देते हैं?

हमारे समाज में विवाह को एक पवित्र बंधन माना जाता है लेकिन क्या हम यह भूल रहे हैं कि यह बंधन प्रेम, सहमति, और विश्वास पर टिका होना चाहिए? अगर सोनम इस शादी के लिए तैयार नहीं थी, तो क्या उसे अपनी बात कहने का मौका मिला? क्या सामाजिक दबावों और नफरत भरी मानसिकता ने उसे इस रास्ते पर धकेला? राजा और सोनम की शादी को अभी एक महीना भी नहीं हुआ था, फिर भी यह रिश्ता इतनी जल्दी टूट गया। यह हमें यह सोचने पर मजबूर करता है कि क्या हम अपने रिश्तों में इतने असुरक्षित हो गए हैं कि संवाद की जगह नफरत और हिंसा ले लेती है?

संस्कारी बहू से खलनायिका तक, सोनम को जज करने में कितना समय लगा? लेकिन क्या हमने यह समझने की कोशिश की वह इस हद तक क्यों पहुँची? एक्स पर कुछ लोग इसे व्यक्तिगत स्वतंत्रता का दुरुपयोग कह रहे हैं, तो कुछ इसे सामाजिक दबावों और नफरत का नतीजा मानते हैं। यह नफरत, जो सोशल मीडिया पर जहरीली टिप्पणियों और व्यक्तिगत हमलों के रूप में दिखती है, हमारे समाज को और विभाजित कर रही है। यह हमें यह भूलने पर मजबूर कर रही है कि हम सब एक ही मानवता का हिस्सा हैं।

समाज कहाँ जा रहा है?

यह त्रासदी हमें एक कड़वी सचाई से रूबरू कराती है: हमारा समाज एक ऐसी दिशा में बढ़ रहा है, जहाँ नफरत और विभाजन हमें अंदर से खोखला कर रहे हैं। हम आधुनिकता और परंपराओं के बीच फँस गए हैं। हम स्वतंत्रता की बात करते हैं, लेकिन .या हम उसे नफरत और असहिष्णुता से मुक्त रख पा रहे हैं? हम रिश्तों में विश्वास की बात करते हैं, लेकिन .या हम उन्हें संवाद और सहानुभूति की नींव दे रहे हैं? यह नफरत, जो व्यक्तिगत कुंठाओं और सामाजिक दबावों से उपज रही है।

परदीप कुमार शर्मा
संयुक्त महाप्रबन्धक (स्याही कारखाना)

समय प्रबंधन

अंग्रेजी में एक कहावत है, Time and Tide wait for none, जिसका अर्थ है समय और ज्वार (नदी) का उफान / तीव्र प्रवाह) किसी का इंतजार नही करते। इस कहावत का सीधा आशय यही है कि समय रहते हमें वह सबकुछ कर लेना है, जो आवश्यक हो। हिन्दी में भी इस संबंध में कई कहावतें हैं, समय ये सारे कहावत हमें यही बताते हैं कि हमे समय का सदुपयोग करना चाहिए। समय एक बहती नदी की तरह है। हम बहती नदी में पांव रखते हैं, तो हमारे पांव को एक पल में जल स्पर्श करते हुए निकल जाता है। नदी से बाहर निकलने तक हमारा पांव गीला होते रहता है, किन्तु सबसे पहले गीला करने वाला वह जल, नदी के बहाव में हमसे कोसों दूर जा चुका होता है। समय भी इसी तरह है। सिर्फ इतना ही है कि हमसे दूर जाते हुए जल को हम देख सकते हैं मगर जाते हुए समय को हम केवल महसूस कर सकते हैं, जिसके लिए समय पर हमें ध्यान केन्द्रित करना होता है। बड़े बुजुर्ग और अनुभवी लोग अक्सर यह सलाह देते है कि जब हम समय की कीमत को पहचानेंगे, तभी अपने कार्य में सफल हो सकेंगे, समय को गंवाने वाले कभी सफल नही होते हैं। किसी भी लक्ष्य को सफलतापूर्वक पाने के लिए प्रबंधन काफी सहायक होती है, और समय का सदुपयोग करने के लिए भी समय प्रबंधन आवश्यक है।

समय प्रबंधन क्या है

समय प्रबंधन की कोई एक निश्चित परिभाषा नहीं है। सही काम करने के लिए सही समय का चयन भी समय प्रबंधन है। समय की मात्रा सदैव सीमित होती है, अतः समय का उचित उपयोग करना भी समय प्रबंधन ही है। प्रबंधन किसी संस्थान के सुचारू संचालन के लिए ही नहीं बल्कि हमारे व्यक्तिगत जीवन के सफल संचालन के लिए भी अति आवश्यक है।

1. समय के सदुपयोग के लिए सुदृढ योजना

कार्य क्षेत्र में यदि हम बिना किसी तैयारी के पहुँचें, तो हम पाएंगे कि कार्य संपन्नता में देर हो रही है, और कार्य की सफलता सह भी होने लगता है। इसके विपरीत यदि पूर्व योजना के साथ कार्यस्थल पर पहुँचे, तो हमें लक्ष्य प्राप्ति में देर नही लगी और कार्य की सफलता में भी कोई संदेह नहीं होगा। दैनंदिन कार्यों की पूर्व योजना के प्रमुख अंग निम्न हैं:-

- इन कार्यों की सूची तैयार रखना जो आज संपन्न करना है।
- कार्यों की महत्ता के आधार पर प्राथमिकता निर्धारित करना
- प्रत्येक कार्य के लिए आवश्यक आंकडे / आवश्यक अवयवों का संकलन
- समय प्रबंधन अगले दिन के कार्य की योजना को पिछले दिन तैयार करने और उस कार्य की संपन्नता हेतु आवश्यक आंकडे आदि तैयार कर लेने को मान्यता प्रदान करना
- प्रत्येक सूचिबद्ध कार्य के लिए समय-सीमा का निर्धारण

2. लक्ष्य एवं उद्देश्यों का निर्धारण

लक्ष्य रहित कार्य किसी भी प्रकार से लाभदायक नहीं होता है, अतः किसी भी कार्य का उद्देश्य एवं कार्य का लक्ष्य निर्धारित करने के उपरांत ही कार्य प्रारम्भ करना चाहिए।

3. समय-सीमा का निर्धारण

प्रत्येक कार्य संपन्न करने के लिए हमें खुद के लिए एक समय-सीमा निर्धारित करना चाहिए और उस समय सीमा के अंदर संबंधित कार्य को समाप्त करने की दिशा में कारगर रूप से कार्य करना चाहिए। जब कार्य का लक्ष्य निधारित समय और स्वनिर्धारित समय सीमा ज्ञात हो तब कार्य की संपन्नता के लिए हम स्वयं पूर्ण रूपेण जिम्मेदार होकर कार्य संपादित करेंगे जो कार्य की सफलता के लिए अति आवश्यक है।

4. कार्यों की प्राथमिकता का निर्णयन

कार्यों की प्राथमिकता का निर्णयन कार्य की महत्ता एवं अत्यावश्यकता के आधार पर किया जाता है। अत्यावश्यकता की स्थिति महत्वपूर्ण कार्यों की प्राथमिकता सूची में फेरबदल कर सकती है। मगर यह सुनिश्चित करना है कि उस दिन के लिए सुचिबद्ध समस्त कार्य निर्धारित समयावधि में संपन्न हो जाएं।

5. सही कार्य की संपन्नता हेतु सही समय देना

किस कार्य के लिए कितना समय देना है, यह निश्चित करना अति आवश्यक है। एक घंटे में संपन्न हो सकने वाले कार्य के लिए संपूर्ण दिन लगा देना, समय-प्रबंधन के सिद्धांत के खिलाफ है।

प्रभावशाली समय प्रबंधन के लिए

सुव्यवस्थित कार्य निष्पादन

- कार्यस्थल साफ-सुथरा एवं सुव्यवस्थित होना चाहिए। अव्यवस्थित कार्यस्थल कार्य की क्षमता को कम करते हैं। व्यक्तिगत रूप से कार्यस्थल की सफाई एवं कार्य निष्पादन हेतु आवश्यक अवयवों को व्यवस्थित रखना सबक लिए नितांत आवश्यक है !
- अपनी गतिविधियों पर ध्यान दें कि कहीं हम समय बर्बाद तो नहीं कर रहे हैं। आजकल संचार माध्यम पुर जोर अवस्था में है। हर व्यक्ति के पास अपना मोबाईल है, जिसमें इंटरनेट, व्हाट्सप आदि सुविधाएं उपलब्ध हैं। समय प्रबंधन सिद्धांत इन सुविधाओं के उपयोग केखिलाफ नहीं है, किन्तु कार्यावधि में इन सुविधाओं के उपयोग पर स्वतः अंकुश लगाना समय प्रबंधन की मांग है। कार्य के दौरान आने वाले फोन कॉल अथवा मैसेज पर ध्यान जाए तो हमारा कार्य निर्धारित समय-सीमा में संपन्न नहीं हो पाएगा। अतः यह स्वतः निश्चित करना होगा कि फोन कॉल एवं मैसेजेस के लिए कब और कितना समय दिया जाए, ताकि कार्यावधि की समाप्ति पर उस दिन के लिए निर्धारित समस्त कार्य सफलतापूर्वक संपन्न हो जाएं।

कार्य निष्पादन में ध्यान केन्द्रित करना

- यह सर्वविदित है कि लापरवाही से किया गया कार्य कभी सफल नहीं हो सकता है, अतः समय प्रबंधन की मांग है कि किसी भी कार्य के निष्पादन के दौरान संपूर्ण ध्यान उस कार्य पर केन्द्रित रहे। ऐसा करने से, एक तरफ यह निर्धारित समय-सीमा में कार्य की संपन्नता में सहायक होता है, और दूसरी तरफ कई प्रकार की त्रुटियों से भी बचाता है।

समय प्रबंधन की महत्ता को जानकर कार्य करने वाला हर व्यक्ति सफल होता है। फिल्मों की बात से किशोर कुमार जी का गाया हुआ एक सुमधुर गीत याद आ रहा है, जिसके बोल हैं - ''आने वाला पल, जाने वाला है। हो सके तो इसमें जिंदगी बिता दो, पल जो ये जाने वाला है।'' हालांकि यह गीत फिल्म की कहानी को ध्यान में रख कर लिखा गया है, किन्तु इन पंक्तियों में कही गई बात दुनिया के प्रत्येक व्यक्ति के लिए अनुकरणीय है। हमारे व्यक्तिगत विकास से हमारा घर, घर से गाँव, गाँव से शहर, शहर से जिला, जिले से राज्य ,और राज्य से संपूर्ण देश, सुखी संपन्न हो सकता है, और व्यक्तिगत विकास का एक छोटा मगर अति महत्वपूर्ण अंग है, समय प्रबंधन। आइये हम सब एक साथ यह संकल्प लें कि, हम खुद समयनिष्ठ होकर सभी लोगों को प्रेरित करें, ताकि देश व समाज के उत्तरोत्तर प्रगति में हमारा सहयोग सार्थक रहे।

सिद्धार्थ श्रीवास्तव
उप महाप्रबंधक (मा.सं.)

प्रेमचंद की जीवनी / जीवन परिचय

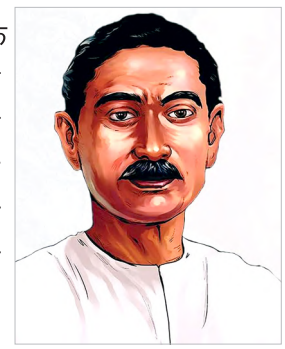

धनपतराय की उम्र जब केवल आठ साल की थी तो माता के स्वर्गवास हो जाने के बाद से अपने जीवन के अन्त तक लगातार विषम परिस्थितियों का सामना धनपतराय को करना पड़ा। पिताजी ने दूसरी शादी कर ली जिसके कारण बालक प्रेम व स्नेह को चाहते हुए भी ना पा सका। कहा जाता है कि आपके घर में भयंकर गरीबी थी। पहनने के लिए कपड़े न होते थे और न ही खाने के लिए पर्याप्त भोजन मिलता था। इन सबके अलावा घर में सौतेली माँ का व्यवहार भी हालत को खस्ता कर रहा था। हालांकि प्रेमचंद पर शोध करने वाले इसकी पुष्टि नहीं करते। प्रेमचंद पर नई-नई जानकारी सामने लाने वाले डॉ कमल किशोर गोयनका कहते हैं- प्रेमचंद गरीब थे, यह सर्वधा तथ्यों के विपरीत है।

आपके पिता ने केवल 15 वर्ष की आयु में आपका विवाह करा दिया, पत्नी उम्र में आपसे बड़ी और बदसूरत थी। पत्नी की सूरत और उसके जबान ने आपके जले पर नमक का काम किया। आप स्वयं लिखते हैं, **उम्र में वह मुझसे ज्यादा थी। जब मैंने उसकी सूरत देखी तो मेरा खून सूख गया।** उसके साथ-साथ जबान की भी मीठी न थी। आपने अपनी शादी के फैसले पर पिता के बारे में लिखा है पिताजी ने जीवन के अन्तिम सालों में एक ठोकर खाई और स्वयं तो गिरे ही, साथ में मुझे भी डुबो दिया: मेरी शादी बिना सोचे-समझे कर डाली। हालांकि आपके पिताजी को भी बाद में इसका एहसास हुआ और उन्होंने काफी अफसोस किया।

विवाह के एक वर्ष बाद ही प्रेमचंद के पिताजी का देहान्त हो गया। अचानक आपके सिर पर पूरे घर का बोझ आ गया। एक साथ पाँच लोगों का खर्चा सहन करना पड़ा। पाँच लोगों में विमाता, उसके दो बच्चें पत्नी और स्वयं। प्रेमचन्द की आर्थिक विपत्तियों का अनुमान इस घटना से लगाया जा सकता है कि पैसे के अभाव में उन्हें अपना कोट बेचना पड़ा और पुस्तकें बेचनी पड़ी। एक दिन ऐसी हालत हो गई कि वे अपनी सारी पुस्तकों को लेकर एक बुकसेलर के पास पहुंच गए। वहाँ एक हेडमास्टर मिले जिन्होंने आपको अपने स्कूल में अध्यापक पद पर नियुक्त किया।

अपनी गरीबी से लड़ते हुए प्रेमचन्द ने अपनी पढ़ाई 10वीं तक पहुंचाई। जीवन के आरंभ में आप अपने गाँव से दूर बनारस पढ़ने के लिए नंगे पाँव जाया करते थे। इसी बीच पिता का देहान्त हो गया। पढ़ने का शौक था, आगे चलकर वकील बनना चाहते थे। मगर गरीबी ने तोड़ दिया। स्कूल आने-जाने के झंझट से बचने के लिए एक वकील साहब के यहाँ ट्यूशन पकड़ लिया और उसी के घर एक कमरा लेकर रहने लगे। ट्यूशन का पाँच रुपया मिलता था। पाँच रुपये में से तीन रुपये घर वालों को और दो रुपये से अपनी जिन्दगी की गाड़ी को आगे बढ़ाते रहे। इस दो रुपये से क्या होता महीना भर तंगी और अभाव का जीवन बिताते थे। इन्हीं जीवन की प्रतिकूल परिस्थितियों में 10वीं पास किया।

गरीबी, अभाव, शोषण तथा उत्पीड़न जैसी जीवन की प्रतिकूल परिस्थितियाँ भी प्रेमचन्द के साहित्य की ओर उनके झुकाव को रोक न सकी। प्रेमचन्द जब मिडिल में थे। तभी से आपने उपन्यास पढ़ना आरंभ कर दिया था। आपको बचपन से ही उर्दू आती थी। आप पर नॉवल और उर्दू उपन्यास का ऐसा उन्माद छाया की आप बुकसेलर की दुकान पर बैठकर ही सारी नॉवल पढ़ गए। आपने दो - तीन साल के अन्दर ही सैकड़ों नॉवेलों को पढ़ डाला।

आपने बचपन में ही उर्दू के समकालीन उपन्यासकार सरुर मोलमा शार, रतन नाथ सरशार आदि के दीवाने हो गये कि जहाँ भी इनकी किताब मिलती उसे पढ़ने का हर संभव प्रयास करते थे। आपकी रुचि इस बात से साफ झलकती है कि एक किताब को पढ़ने के लिए आपने एक तम्बाकू वाले से दोस्ती करली और उसकी दुकान पर मौजूद तिलस्मे-होशरुबा पढ़ डाली।

अंग्रोजी के अपने जमाने के मशहूर उपन्यासकार रोनाल्ड की किताबों के उर्दू तरजुमो को आपने काफी कम उम्र में ही पढ़ लिया था। इतनी बड़ी - बड़ी किताबों और उपन्यासकारों को पढ़ने के बावजूद प्रेमचन्द ने अपने मार्ग को अपने व्यक्तिगत विषम जीवन अनुभव तक ही महदूद रखा।

आपकी पहली पत्नी पारिवारिक कटुताओं के कारण घर छोड़कर मायके चली गई फिर वह कभी नहीं आई। विच्छेद के बावजूद कुछ सालों तक वह अपनी पहली पत्नी को खर्चा भेजते रहे। 1905 केअन्तिम दिनों में आपने शिवरानी देवी से शादी कर ली। शिवरानी देवी एक बाल विधवा थी और विधवा के प्रति आप सदा स्नेह के पात्र रहे थे।

दूसरी शादी के पश्चात् आपके जीवन में परिस्थितियां कुछ बदली और आय की आर्थिक तंगी कम हुई। आपके लेखन में अधिक सजगता आई। आपकी पदोन्नति हुई तथा आप स्कूलों के डिप्टी इन्सपेक्टर बना दिये गए। इसी खुशहाली के जमाने में आपकी पाँच कहानियों का संग्राह 'सोजे वतन' प्रकाश में आया। यह संग्राह काफी मशहूर हुआ।

> "तेरह वर्ष की उम्र में से ही प्रेमचन्द ने लिखना आरंभ कर दिया था। शुरु में आपने कुछ नाटक लिखे फिर बाद में उर्दू में उपन्यास लिखना आरंभ किया। इस तरह आपका साहित्यिक सफर शुरु हुआ जो मरते दम तक साथ-साथ रहा।"

सादा एवं सरल जीवन के मालिक प्रेमचन्द सदा मस्त रहते थे। उनके जीवन में विषमताओं और कटुताओं से वह लगातार खेलते रहे। इस खेल को उन्होंने बाजी मान लिया जिसको हमेशा जीतना चाहते थे। अपने जीवन की परेशानियों को लेकर उन्होंने एक बार मुंशी दयानारायण निगम को एक पत्र में लिखा हमारा काम तो केवल खेलना है--खूब दिल लगाकर खेलना--खूब जी-तोड़ खेलना, अपने को हार से इस तरह बचाना मानों हम दोनों लोकों की संपत्ति खो बैठेंगे। किन्तु हारने के पश्चात्-पटखनी खाने केबाद, धूल झाड़ खड़े हो जाना चाहिए और फिर ताल ठोंक कर विरोधी से कहना चाहिए कि एक बार फिर जैसा कि सूरदास कह गए हैं, तुम जीते हम हारे, पर फिर लड़ेंगे। कहा जाता है कि प्रेमचन्द हंसोड़ प्रकृति के मालिक थे। विषमताओं भरे जीवन में हँसोड़ होना एक बहादुर का काम है। इससे इस बात को भी समझा जा सकता है कि वह अपूर्व जीवनी-शक्ति का द्योतक थे। सरलता, सौजन्यता और उदारता के वह मूर्ति थे।

जहां उनके हृदय में मित्रों के लिए उदार भाव था वहीं उनके हृदय में गरीबों एवं पीड़ितों के लिए सहानुभूति का अथाह सागर था। जैसा कि उनकी पत्नी कहती हैं कि जाड़े के दिनों में चालीस-चालीस रुपये दो बार दिए गए दोनों बार उन्होंने वह रुपये प्रेस केमजदूरों को दे दिये। मेरे नाराज होने पर उन्होंने कहा कि यह कहां का इंसाफ है कि हमारे प्रेस में काम करने वाले मजदूर भूखे हों और हम गरम सूट पहनें।

प्रेमचन्द उच्चकोटि के मानव थे। आपको ग्रामीण जीवन से बहुत प्रेम था। वह सदा साधारण लिबास में रहते थे। जीवन का अधिकांश भाग उन्होंने गाँव में ही गुजारा। बाहर से बिल्कुल साधारण दिखने वाले प्रेमचन्द अन्दर से जीवनी-शक्ति के मालिक थे। अन्दर से जरा सा भी किसी ने देखा तो उसे प्रभावित होना ही था। वह आडम्बर एवं दिखावा से मीलों दूर रहते थे। जीवन में न तो उनको विलास मिला और न ही उनको इसकी तमन्ना थी। तमाम महापुरुषों की तरह अपना काम स्वयं करना पसंद करते थे।

जीवन के प्रति उनकी अगाढ़ आस्था थी लेकिन जीवन की विषमताओं के कारण वह कभी भी ईश्वर के बारे में आस्थावादी नहीं बन सके। धीरे-धीरे वे अनीश्वरवादी बन गए थे। एक बार उन्होंने जैनेन्दजी को लिखा तुम आस्तिकता की ओर बढ़े जा रहे हो--पक्के भक्त बनते जा रहे हो। मैं संदेह से पक्का नास्तिक बनता जा रहा हूँ।

मृत्यु के कुछ घंटे पहले भी उन्होंने जैनेन्द्रजी से कहा था-जैनेन्द्र, लोग ऐसे समय में ईश्वर को याद करते हैं, मुझे भी याद दिलाई जाती है। पर मुझे अभी तक ईश्वर को कष्ट देने की आवश्यकता महसूस नहीं हुई। प्रेमचन्द ने अपने नाते के मामू के एक विशेष प्रसंग को लेकर अपनी सबसे पहली रचना लिखी। 13 साल की आयु में 1894 में होनहार बिरवार के होत चिकने-चिकने पात नामक नाटक की रचना की। 1898 में एक उपन्यास लिखा। लगभग इसी समय रुठी रानी नामक दूसरा उपन्यास जिसका विषय इतिहास था की रचना की 1902 में प्रेमा और 1904 -05 में हम खुर्मा व हम सवाब नामक उपन्यास लिखे गए। इन उपन्यासों में विधवा-जीवन और विधवा-समस्या का चित्रण प्रेमचन्द ने काफी अच्छे ढंग से किया।

जब कुछ आर्थिक निर्जिश्चतता आई तो 1907 में पाँच कहानियों का संग्राह सोजे वतन (वतन का दुख दर्द) की रचना की, जैसा कि इसके नाम से ही मालूम होता है, इसमें देश प्रेम और देश की जनता का दर्द को रचनाकार ने प्रस्तुत किया। अंग्रेज शासकों को इस संग्राह से बगावत की झलक मालूम हुई। इस समय प्रेमचन्द नवाबराय के नाम से लिखा करते थे। लिहाजा नवाबराय की खोज शुरु हुई। नवाबराय पकड़ लिये गए। उस दिन आपके सामने ही आपकी इस कृति को अंग्रेजी शासकों ने जला दिया और बिना आज्ञा न लिखने का बंधन लगा दिया गया।

इस बंधन से बचने के लिए प्रेमचन्द ने दयानारायण निगम को पत्र लिखा और उनको बताया कि वह अब कभी नयाबराय या धनपतराय के नाम से नहीं लिखेंगे तो मुंशी दयानारायण निगम ने पहली बार प्रेमचन्द नाम सुझाया। यहीं से धनपतराय हमेशा के लिए प्रेमचन्द हो गये।

सेवा सदन, मिल मजदूर तथा 1935 में गोदान की रचना की गोदान आपकी समस्त रचनाओं में सबसे अधिक लोकप्रिय हुई। अपने जीवन के अंतिम दिनों में 'मंगलसूत्र' उपन्यास लिखना आरंभ किया। दुर्भाग्यवश मंगलसूत्र को अधूरा ही छोड़ गये। इससे पहले उन्होंने महाजनी और पूँजीवादी युग प्रवृत्ति की निन्दा करते हुए महाजनी सभ्यता नाम से एक लेख भी लिखा था।

1936 में प्रेमचन्द बीमार रहने लगे। अपने इस बीमार काल में ही आपने प्रगतिशील लेखक संघ की स्थापना में सहयोग दिया। आर्थिक कष्टों तथा इलाज ठीक से न कराये जाने के कारण 8 अक्टूबर 1936 को आपका देहान्त हो गया। इस तरह यह दीप सदा के लिए बुझ गया, जिसने अपने जीवन की लौ को कण-कण जलाकर हिंदी साहित्य का पथ आलोकित किया।

विवेक प्रसाद
वरिष्ठ पर्यवेक्षक (राजभाषा)

इलाज का धंधा?

रामशरण की पत्नी सीने में दर्द से तड़प रही थी। वे अपनी पत्नी को लेकर शहर के सबसे बड़े हॉस्पिटल में पहुंचे।

रिसेप्शनिस्ट ने काउंटर पर मुस्कराकर कहा, 'चिंता मत कीजिए, हमारे पास वर्ल्ड-क्लास इलाज है। कोई एक पैकेज चुन लीजिए- गोल्ड, प्लेटिनम या डायमंड?' घबराए रामशरण ने प्लेटिनम पैकेज ले लिया।

अगले पांच दिन हर घंटे नए टेस्ट, स्कैन और इंजेक्शन पड़ते रहे। डॉक्टर आते, कुछ लिखते और निकल जाते।

छठे दिन शाम को डॉक्टर ने कहा- 'कन्फम हुआ, गैस थी आपके पेशेंट को सीने में दर्द गैस की वजह से हुआ था। मरीज बिलकुल ठीक है।'

बिल देखकर रामशरण के होश उड़ गए, कुल 3,85,000 रुपये का था।

उन्होंने हकलाते हुए पूछा, 'इतना सब सिर्फ गैस के इलाज में?'

रिसेप्शनिस्ट फिर मुस्कुराई- 'सर, यहां वर्ल्ड-क्लास सर्विस है। प्लेटिनम का रेंज यही है।'

रामशरण को चक्कर आने लगा।

गौरव कुमार
कार्यालय सहायक (मा.सं)

आँगन की चिड़िया

चाची...। पड़ोस वाली नन्हीं पिंकी आवाज़ दे रही थी।

राशि ने खिड़की से झाँका। पिंकी आँगन में खड़ी थी। उसके आसपास ज़मीन पर चावल बिखरे थे। राशि को खिड़की पर देखकर पिंकी दौड़ती हुई आई और बोली, 'चाची, चावल दो ना, मुझे चिया को किलाना है, माँ चावल नहीं दे रही।' राशि ने मुस्कुराते हुए कहा, 'वो देखो, ज़मीन पर कितने सारे चावल बिखरे हैं, पहले चिया को इतने चावल तो खिला दो।' पिंकी बोली, 'खा लेगी चिया, सब खा लेगी। अभी देखना, जैसे ही आँगन खाली होगा, चिया चावल चुगने यहाँ आ जाएगी। उसे और चावल दो ना चाची।'

राशि खिड़की से हटी और रसोई से चावल लाकर पिंकी को दे दिए। पिंकी फिर मगन हो गई और राशि का ध्यान भी उधर ही लग गया। दो-चार चिड़ियाँ पिंकी से थोड़ा दूर रहकर चावल चुगती और पिंकी के पास आते ही फुर्र से उड़ जातीं। पिंकी उन्हें बुलाने लगती। 'आ चिया, आ..'।

राशि सोचने लगी; 'ऐसे ही तो वो भी बुलाती थी'। रोज़ सुबह होते ही वो आंगन में पहुँच जाती और जिस दिन वो नहीं पहुँचती, दादाजी की आवाज़ लग जाती 'राशि, चिड़ियों को दाना नहीं खिलाएगी?' अक्सर दादी कहती, 'क्या रोज़ सुबह राशि को खेल में लगा देते हो, अरे अब उसे पढ़ने बैठाया करो। स्कूल में नाम लिखाना है। ये खेल उसकी ज़िन्दगी नहीं बनाएगा।' दादाजी कहते, 'स्कूल जाने लगेगी तो पढ़ लेगी, अभी तो खेलने दो हमारे आँगन की चिड़िया को।'

राशि, दादाजी की याद कर, खिड़की से हट आई और अनमनी सी बैठ गई। कुछ करने को ही नहीं है। लंच वो तैयार कर चुकी है। कपड़े धुल कर सूख रहे हैं। बच्चों के स्कूल से आने में देर है। पिंकी को चिया के साथ देखकर राशि की बचपन की यादें ताज़ा हो गई हैं। दादाजी और दादी का दुलार याद आ रहा है। पिताजी का प्यार याद आ रहा है, पर सबसे ज़्यादा उसे माँ याद आ रही है। बार-बार उसकी आँखें माँ को याद कर भर जाती हैं। 'कल माँ से बात की थी, तब पता लगा था कि वो तीन दिन से बुखार में पड़ी थीं।' राशि बेचैन हो गई। उसे यकीन नहीं हो रहा था कि माँ डॉक्टर से दवा ले रहीं होंगी, पर माँ उसे तसल्ली देती रही कि अब तो उसका बुखार उतर भी गया है।

राशि क्या करे। कैसे समझाए खुद को। वो इतनी दूर है कि चाहकर भी माँ को देखने नहीं पहुँच सकती। अभी कुछ दिन पहले ही तो वो माँ से मिलकर आई है। पर ऐसे नहीं चलेगा। अगर वो नहीं जा सकती, तो माँ की बात पर ही यकीन करना होगा। उसे किसी तरह अपना मन इन बातों से हटाना होगा।

उसने खुद को संयत किया 'चलो, वो अपनी अलमारी ठीक कर लेगी। इस बार मायकेसे लौटकर उसने सूटकेस खाली किया और अलमारी में भर दिया। तब से डेढ़ हफ्ते हो गये, आज सारा सामान तरतीब से रख देगी।' अलमारी खोलते ही उसे सामने नज़र आई माँ की दी हुई साड़ी। राशि ने बड़े प्यार से उस पर हाथ फेरा। 'माँ ने अपने हाथ से काढ़ी थी। इस बार चलते वक़्त माँ जल्दी से उसके हाथों में ये साड़ी थमा गई थीं।' उसने साड़ी निकालकर कंधे पर डाल कर देखा। उसे लगा, माँ ने उसके कंधे पर हाथ रखा है। राशि ने कंधे से साड़ी उतारकर उसे अच्छी तरह संभालकर हैंगर पर टांग दिया। दो चार कपडे ठीक किये, तभी राशि का हाथ उस अलबम पर पड़ा, जो वो इस बार माँ से मांग लाई थी। उसने अलबम खोला, तो उसका बचपन सामने आ गया।

कितनी सारी तस्वीरें हैं बचपन की। कहीं वो दादाजी और दादीजी के साथ है, तो कहीं माँ-पिताजी के साथ। 'ये उसकी सालगिरह की तस्वीरे हैं।' सुन्दर फ्रॉक में नन्ही राशि मुस्कुरा रही थी। 'ये फ्रॉक माँ ने बनाई थी।' राशि ने ठान लिया था कि इस बार सालगिरह में वो झालर वाली घेरदार फ्रॉक ही पहनेगी। बाज़ार के कई चक्कर लगे, पर राशि की पसंद की फ्रॉक कहीं नहीं मिली। तब माँ ने रात भर जागकर ये फ्रॉक बनाई थी, जिसे देखकर राशि माँ से लिपट गई थी 'यही फ्रॉक चाहिए थी मुझे।'

'माँ कैसे समझ जाती थी उसके मन की बात, बचपन में'। 'पर आज, वही माँ समझते हुए भी राशि के मन से अनजान बनकर जी रही है'। राशि ने फिर गहरी सांस ली। उसकी नज़रें अभी भी सालगिरह वाले फोटो पर टिकी थीं। वो देख रही है माँ का उजला चेहरा...'कितनी चमक है माँ के चेहरे पर।' जब तक पिताजी थे, माँ का चेहरा ऐसे ही चमकता था। बाद की तस्वीरों में दादाजी और दादीजी नहीं हैं। यहाँ माँ-पिताजी के साथ वो, भाई का हाथ थामे खड़ी है। उसका छोटा भाई; जो माँ की गोद के लिए मचल रहा था, पर फोटोग्राफर के कहने पर उसे राशि के साथ खड़ा होना पड़ा। तभी तो तस्वीर में उसकेनन्हें से चेहरे पर गुस्सा झलक रहा है। 'आज यही भाई कितना बड़ा दिखने लगा है। चेहरा भी बदल गया है।'

राशि गहरी सांस लेकर अलबम पलटने लगी। 'ये तस्वीर तो पिताजी के बाद की है।' वो और माँ साथ बैठे हैं। भाई पीछे खड़ा है। भाई का एक हाथ उसके कंधे पर है और एक माँ के कंधे पर। माँ का चेहरा उतरा हुआ है, पर उसकी आँखों में कितना विश्वास झलक रहा है। भाई को देख राशि और माँ दोनों के चेहरे खिल जाते थे। राशि को तो अपना भाई दुनिया से निराला लगता। माँ के साथ वो भी यही कोशिश करती कि भाई को सबसे अच्छी चीज़ मिले। सबसे अच्छा कपड़ा पहने और उसे घर का सबसे अच्छा बिस्तर मिले। वो भाई के साथ साये की तरह लगी रहती। उसकी ग़लतियाँ अपने सर ले लेती। माँ की डांट से उसे बचा लेती। उसे लगता, भाई जब बड़ा हो जाएगा, तो खुद ही समझ जाएगा। फिर घर, उसी तरह मुस्कुराएगा जैसे पिताजी के समय मुस्कुराता था।

राशि की आँखे गीली हो आईं। 'जो सोचो, वो कहाँ होता है।' ये तस्वीर रक्षाबंधन की है। 'कितनी ख़ुशी झलक रही है राशि के चेहरे पर, और भाई कैसे मुस्कुरा रहा है।' अब तो रक्षाबंधन आता है, तो वो कल्पना में ही भाई को राखी बंधवाते देख लेती है और अपना व्रत खोल लेती है। उसका मन ही नहीं होता रक्षाबंधन पर भाई के पास जाने का।

उसने सोचा, और अलबम बंद कर माँ को फोन मिलाने लगी। घंटी बजती रही। 'शायद माँ सो गई होंगी।' राशि ने फोन रख दिया। 'आँख लग गई होगी माँ की। वो कितनी कमज़ोर हो गई हैं।' राशि जब तक माँ के पास रही, उसे लगता रहा किसी तरह माँ को आराम मिले। जब वो रात में माँ के पैरो में तेल लगाने लगती, तो माँ मुस्कुराकर कहती 'जाने दे राशि, इन बूढ़ी हड्डियों में तू चाहे तेल लगा या घी, इनका दर्द नहीं जाएगा।'

माँ अब कितना चुप भी रहने लगी हैं, और भाई कितना बोलने लगा है। कितनी शिकायते हैं भाई को। 'अपने बचपन की, अपने घर की और माँ के व्यवहार की।' भाई की उन शिकायतों में एक बार भी माँ के उस संबल की बात नहीं होती, जो कदम-कदम पर माँ उन्हें देती आई है।

राशि को याद है। यही भाई, कभी किसी चीज़ की इच्छा करता, तो माँ 'कैसे ना कैसे' उसे पूरा करती थीं। उसे पढ़ाने के लिए माँ ने अपनी जमा-पूँजी लगा दी। आज वही भाई माँ के सामने जब-तब पैसे का रोना रोता रहता है। यही भाई था, जिसे मोटर साइकिल दिलाने केलिए माँ ने अपनी चूड़ियाँ तक बेच दीं थीं। वही भाई आज माँ की दवा लाना भूल जाता है। उसे शिकायत है कि माँ ने उसे 'वो सब' नहीं दिया, जो दूसरे बच्चों को मिलता है। ये शिकायत करते समय वो भूल जाता है कि पापा के बाद माँ ने अपनी खुशियों का तिल-तिल होम करते हुए, किस तरह उसके लिए खुशियां जुटाई हैं। कभी-कभी तो अपनी सामर्थ्य से बाहर जाकर भी माँ ने भाई की इच्छा पूरी की है, पर भाई को आज माँ की हर बात से शिकायत है। भाई की शिकायतों पर भाभी की मुस्कान उससे देखी नहीं जाती, पर राशि अब चाहकर भी भाई को समझा नहीं पाती। उसे अपना भाई बिलकुल अजनबी लगता है और माँ बेहद निरीह लगती है।

राशि का मन, माँ का चेहरा देखकर भर आता है। इस बार उसने माँ से कहा, 'तुम साथ चलो माँ।' पर माँ ने मना कर दिया 'ना राशि, बेटी के घर माँ अच्छी नहीं लगती।' राशि के तमाम तर्क धरे रह गये, पर माँ साथ नहीं आईं।

कैसे आएंगी। वो तो आँगन की चिड़िया थी, जो अपना आँगन छोड़ उड़ चुकी है। अब तो उसे सिर्फ़ मेहमान बनकर आना है। चार दिन हँस-खेलकर फिर वापिस लौट जाना है। लाख जुड़ा हो उसका मन, उस आँगन से; पर, वो बेटी है, पराये घर की है और भाई लाख शिकायतें करे, पर वो बेटा है, अपने घर का है। यही सच है।

दीपाली ठाकुर
कार्यालय सहायक (मा. सं)

छलकता हृदय अब कैसे विलुप्ति के कगार पर !

हम सब एक ऐसे युग में प्रवेश कर रहे है, जहां मानव को अपने सबसे एकमात्र हृदय की देखभाल करनी होगी सहृदय के बिना प्राप्त समृद्धि रावणत्व की जननी है संवेदनशील हृदय का स्वामी होना ही असली गौरीशंकर है। तंबाखू के विशाल खेत की तुलना में तुलसी का पौधा अधिक मूल्यवान है। रावण के पास क्या नहीं था, उसके पास सोने की लंका थी, फिर भी वह गरीब था। दूसरी ओर शबरी के पास केवल कुछ बेर थे, फिर भी वह समृद्ध थी हर मानव के पास एक छलकता हुआ हृदय होता है, किन्तु अब वही हृदय विलुप्ति के कगार पर है।

आज की दुनिया में चारो और चालाकी के बीज बोए जा रहे है हर दुकान में चालाकी का व्यापार होने लगा है। हर कार्यालय में चालाकी का बोलबाला है। इंसान अपनी सारी चालाकी दूसरों को ठगने मे लगा देता है। इसके बाद जो थोड़ी बहुत चालाकी बचती है, उसे लेकर वह मंदिर की और जाता है। वहां जाकर दान पैटी में कुछ सिक्के डालता है और सिढियां उतरते हुए सोचता है कि अब उसके आराध्य उसे और पीड़ाएं नहीं देंगे दानपेटी में पुजारी की रुचि हो सकती है, ईश्वर को नहीं , ईश्वर की रुचि दानपेटी में नहीं बल्कि हृदय में होती है।

हृदय को इमोशनल ब्रेन कहते है कई लोगों के पास तेजस्वी मस्तिस्क होता है, लेकिन संवेदनशिल हृदय नहीं होता ऐसे लोग सब कुछ पा सकते है, पर प्रेम के प्रसाद से वंचित रह जाते है। उनके बंगले में बहुत से सुरक्षाकर्मी होते है, बंगला रोशनी से जगमगाता है, पर प्रेम के अभाव में वे सबसे गरीब होते हैं। यदि सूक्ष्म द्रष्टि से देखा जाए तो ऐसे बंगले में एक आभासी गरीबी छिपी होती है जो बाहर से रोनकदार दिखती है। ऐसे घरों में संवेदनाओं का वैभव नहीं होता, इसीलिए कवियों का प्रवेश वहां संभव नहीं। किसके घर जाना चाहिए, इसकी गहरी समझ कवियों, कलाकारों और कथाकारों के पास होनी चाहिए। दुर्योधन के मेवों से अधिक स्वाद विधुर कि सादी सब्जी में था, यह कृष्ण ने सिद्ध कर दिया।

हम एक मायावी दुनिया में रहते हैं, जहां मनुष्य सामने वाले के इरादों को तो भांप लेता है, पर उसका हृदय पहचानने में चूक जाता हूँ। टीवी धारावाहिकों में सामने वाले कि चालों कि तर्कभरी जलेबी बनती रहती है जिस मित्र से धोखे की कल्पना भी न की हो, जब वही व्यक्ति धोखा देता है, तब हृदय टूट जाता है वह हृदय चालक व्यक्ति का नहीं होता, टूटता वही हृदय है वास्तव में जो हृदय है। व्यापार प्रधान समाज में पैसों के लिए धोखा देने का चलन बढ़ गया है

जब मानवीय रिश्तों की मिठास घटती है तो टूटे हुए, लोगों की संख्या बढ़ती जाती है। तब मनुष्य की सहायता के लिए सामने आते है। तंबाखू, शराब और अन्य नशीले पदार्थ जब भावनाओं की भूक नहीं मिटती तो दूसरी भूख पैदा होती है। चालाकी के चक्रव्यूह मे भावनाएं जलती रहती है। व्यसनों के मूल मे इसी अग्निस्नान की पीड़ा छिपी होती है। ईश्वर जैसा कोई आश्वासन नहीं है। ईश्वर को प्रेम से लबालब हृदय चाहिए, सिक्के नहीं यह तो तय है, कि चालक व्यक्ति का हृदय हमेशा खाली रहता है।

हृदय धोखा सह सकता है, पर धोखा दे नहीं सकता, धोखा देने का काम उसने मस्तिस्क पर छोड़ दिया है। कंप्यूटर मस्तिष्क को समझ सकता है, पर हृदय को नहीं मस्तिस्क का विकास करने में वैज्ञानिक सफल हुए है, पर हृदय का विकास आज तक नहीं हो पाया। आज दुनिया कि अनेक समस्याओं की जड़ में अविकसित हृदय की अतृप्त कामनाओं की चीखे सुनाई देती है। कभी-कभी इच्छा होती है कि घर के दरवाजे पर एक तख्ती टांग दूँ, जिस पर लिखा हो, **'खाली हाथ आओ, पर खाली हाथ हृदय न आओ।**

टेक्नोलोजी ने नया धर्म ओढ़ लिया है। भगवान गणेश कि जगह कंप्यूटर ने ले ली है। टेलीकम्यूनिकेशन ने भौतिक दूरी को मिटा दिया है। ईश्वर अब 'सुविधा' बन गया है पेनकिलर कि गोली पीड़ानाशिनी माता बन गई है। दुनिया छोटी होती जा रही है, लेकिन हृदय का विस्तार नहीं हो रहा।

जगदीश पटेल
वरिष्ठ कार्यालय सहायक

फल और हमारा स्वास्थ्य

प्रकृति से प्राप्त नैसर्गिक आहार हमारे लिए औषधि का काम करता है, वह फल है। प्रकृति ने जिस रूप में हमें फल दिए हैं, उसे वैसे ही उसी रुप में ग्रहण करें तो वह औषधि यह पांचो तत्व प्राकृतिक औषधि बन जातें हैं। मौसम में आने वाले हर फल का अपना अलग महत्व है। इसलिए मौसमी फल अवश्य खाएँ। मौसमी फलों को खाने से हमारे शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता बढती है तथा शरीर की शुद्धि होकर विजातीय तत्व बाहर निकल जातें हैं।

फलों में भरपूर मात्रा में पानी होता है जिसे नियमित खाने से शरीर में पानी की कमी नहीं होती। फलों में भरपूर मात्रा में विटामिन भी होता है। हर प्रकार के विटामिन फलों से मिल जाते हैं जो हमारे स्वस्थ्य के लिए आवश्यक है। इनमें मिनरल और माइक्रो मिनरल होतें हैं। इनमें केल्शीयम, आयरन, पोटेशियम होते हैं जो स्वास्थ्य के लिए आवश्यक है। फल प्राकृतिक रूप से रेशेदार आहार है यह पाचन संस्थान से संबंधित सभी प्रकार की समस्या के लिए लाभदायक है। फल अधिकतर क्षारीय होते हैं जो शरीर में बढी अम्लता को कम करते हैं जिससे कई बीमारियों से बचा जा सकता है।

फलों में वसा की मात्रा बहुत कम होती है जो मोटापा कम करने में लाभदायी है। खट्टे फलों में विटामिन सी होता है जो रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढाता है। फलों में प्राकृतिक मिठास होती है जो फ्रक्टोस के रुप में रहती है जिससे मीठा शरीर में आसानी से पच जाता है और शुगर लेवल को भी नियंत्रित करता है। फल उचित मात्रा में एवं एक निश्चित समय पर लें। फलों को हमेशा दिन के समय खाएँ, खासकर दोपहर 12 बजे तक विशेष लाभदायक होते। सूर्यास्त होने के बाद फल खाने से लाभ कम मिलता है।

फलों को हमेशा ताजा खाए। फलों को साफ, स्वच्छ नमक एवं हल्दी के पानी से धोकर साफ कर लें। जो फल चबाकर नहीं खा सकते वह जूस बनाकर ले सकते हैं। इसमें शक्कर ना डालें। मिठास के लिए खजूर डाल सकते हैं जो आसानी से पचता है।

फल एंटी बेक्टिरियल, एंटी अजिंग, एंटी ऑक्साइडेन्ट तथा पेन कीलर का काम करते हैं। एक व्यक्ति को 500 ग्राम, 3-4 प्रकार के फल आहार में नियमित रूप से लेना चाहिए। फल प्राकृतिक आहार का काम करते हैं जो हमारे लिए औषधि बन जाते हैं।

वृंदा खांडवे
प्राकृतिक चिकित्सक व आहार विशेषज्ञ

तीन पुतले

महाराजा चन्द्रगुप्त का दरबार लगा हुआ था। सभी सभासद अपनी अपनी जगह पर विराजमान थे। महामन्त्री चाणक्य दरबार की कार्यवाही कर रहे थे। महाराजा चन्द्रगुप्त को खिलौनों का बहुत शौक था। उन्हें हर रोज़ एक नया खिलौना चाहिए था। आज भी महाराजा के पूछने पर किया नया है; पता चला कि एक सौदागर आया है और कुछ नये खिलौने लाया है। सौदागर का ये दावा है कि महाराज क्या किसी ने भी आज तक ऐसे खिलौने न कभी देखें हैं और न कभी देखेंगे। सुन कर महाराज ने सौदागर को बुलाने की आज्ञा दी। सौदागर आया और प्रणाम करने के बाद अपनी पिटारी में से तीन पुतले निकाल कर महाराज के सामने रख दिए और कहा कि अन्नदाता ये तीनों पुतले अपने आप में बहुत विशेष हैं। देखने में भले एक जैसे लगते हैं मगर वास्तव में बहुत निराले हैं। पहले पुतले का मूल्य एक लाख मोहरें हैं, दूसरे का मूल्य एक हज़ार मोहरे हैं और तीसरे पुतले का मूल्य केवल एक मोहर है।

सम्राट ने तीनों पुतलों को बड़े ध्यान से देखा। देखने में कोई अन्तर नहीं लगा, फिर मूल्य में इतना अन्तर क्यों? इस प्रश्न ने चन्द्रगुप्त को बहुत परेशान कर दिया। हार के उसने सभासदों को पुतले दिये और कहा कि इन में क्या अन्तर है मुझे बताओ। सभासदों ने तीनों पुतलों को घुमा फिराकर सब तरफ से देखा मगर किसी को भी इस गुत्थी को सुलझाने का जवाब नहीं मिला। चन्द्रगुप्त ने जब देखा कि सभी चुप हैं तो उस ने वही प्रश्न अपने गुरू और महामन्त्री चाणक्य से पूछा।

चाणक्य ने पुतलों को बहुत ध्यान से देखा और दरबान को तीन तिनके लाने की आज्ञा दी। तिनके आने पर चाणक्य ने पहले पुतले के कान में तिनका डाला। सब ने देखा कि तिनका सीधा पेट में चला गया, थोड़ी देर बाद पुतले के होंठ हिले और फिर बन्द हो गए। अब चाणक्य ने अगला तिनका दूसरे पुतले के कान में डाला। इस बार सब ने देखा कि तिनका दूसरे कान से बाहर आ गया और पुतला ज्यों का त्यों रहा। ये देख कर सभी की उत्सुकता बढ़ती जा रही थी कि आगे क्या होगा। अब चाणक्य ने तिनका तीसरे पुतले के कान में डाला। सब ने देखा कि तिनका पुतले के मुँह से बाहर आगया है और पुतले का मुँह एक दम खुल गया। पुतला बराबर हिल रहा है जैसे कुछ कहना चाहता हो।

चन्द्रगुप्त के पूछ्ने पर कि ये सब क्या है और इन पुतलों का मूल्य अलग अलग क्यों है, चाणक्य ने उत्तर दिया।

राजन, चरित्रवान सदा सुनी सुनाई बातों को अपने तक ही रखते हैं और उनकी पुष्टी करने के बाद ही अपना मुँह खोलते हैं। यही उनकी महानता है। पहले पुतले से हमें यही ज्ञान मिलता है और यही कारण है कि इस पुतले का मूल्य एक लाख मोहरें है।

कुछ लोग सदा अपने में ही मग्न रहते हैं। हर बात को अनसुना कर देते हैं। उन्हें अपनी वाह-वाह की कोई इच्छा नहीं होती। ऐसे लोग कभी किसी को हानि नहीं पहुँचाते। दूसरे पुतले से हमें यही ज्ञान मिलता है और यही कारण है कि इस पुतले का मूल्य एक हज़ार मोहरें है।

कुछ लोग कान के कच्चे और पेट के हल्के होते हैं। कोई भी बात सुनी नहीं कि सारी दुनिया में शोर मचा दिया। इन्हें झूठ सच का कोई ज्ञान नहीं बस मुँह खोलने से मतलब है। यही कारण है कि इस पुतले का मूल्य केवल एक मोहर है।

साजिद खॉन
कार्यालय सहायक (मा. सं.)

मौसी माँ: एक अनोखा बंधन

एक बाघिन जिसने प्रकृति को चुनौती दी और अपनी बहन के शावकों का पालन पोषण और संरक्षण किया। मातृत्व की एक दुर्लभ प्रवृत्ति के प्रदर्शन में संजय दुबरी टाईगर रिजर्व में एक बाघिन ने अपनी प्रजाति की एकाकी प्रकृति को चुनौती देते हुए अपनी बहन के अनाथ शावकों को गोद लिया और उनका पालन पोषण किया, जिससे एक त्रासदी जंगल में अस्तित्व और करुणा की एक शक्तिशाली कहानी में बदल गयी।

मध्य प्रदेश के संजय दुबरी टाईगर रिजर्व के मध्य में 2022 में एक ऐसी कहानी सामने आई जिसने बड़े बड़े वन्यजीव विशेषज्ञों को भी अचंभित कर दिया। मौसी माँ यह नाम उसे अपने इसी रूप के लिए वन्य विभाग के अधिकारियों द्वारा दिया गया।

यह त्रासदी दृढ़ता और मातृत्व की असाधारण प्रवृत्ति की कहानी थी, जो जंगल के प्राकृतिक नियमों से परे थी, जहाँ जीवित रहने के लिए अक्सर कमजोरों का बलिदान जरूरी होता है, अपने राजसी बाघों के लिए प्रसिद्ध इस जगह पर, एक बाघिन की करुणा से भरा कार्य संरक्षण प्रयासों के लिए आशा की किरण और बाघ के व्यवहार की रहस्यमयी गहराई को जानने का एक प्रमाण बन गया।

त्रासदी: एक मादा बाघिन की मृत्यु

16 मार्च 2022 की रात, संजय टाइगर रिजर्व का सन्नाटा एक दुःखद दुर्घटना से बिखर गया। वन अधिकारियों और पर्यटकों, दोनों के लिए प्रिय एक मादा बाघिन, रिजर्व के मुख्य क्षेत्रों में से एक को दो भागों में विभाजित करने वाली रेल्वे पटरी पार करते समय ट्रेन की चपेट में आ गई। गंभीर रूप से घायल वह पटरियों के पास पड़ी मिली, उसकी रीढ़ की हड्डी क्षतिग्रास्त हो चुकी थी। पशु चिकित्सको की एक टीम क सर्वोत्तम प्रयासों के बावजूद, अगली शाम वह अपनी चोटों के कारण दम तोड़ गई, अपने पीछे आठ से नौ महीने की उम्र के चार शावक छोड़ गई, जो निर्मम जंगल में खुद की देखभाल करने के लिए बहुत छोटे थे। वर्षो से घटती बाघ आबादी के बाद, अपनी बाघ आबादी को फिर से बनाने के लिए कड़ी मेहनत कर रहे इस अभयारण्य के लिए, एक प्रजनन करने वाली बाघिन का जाना एक विनाशकारी आघात था। तत्काल चुनौती स्पष्ट हो गई। उसके अनाथ शावकों का अस्तित्व। अपनी माँ के संरक्षण और मार्गदर्शन के बिना इन युवा बाघों को लगभग निश्चित मृत्यु का सामना करना पड़ा, वे शिकारियों, भुखमरी और जंगल में जीवन की कठोर वास्तविकताओं के सामने असुरक्षित थे।

एक माँ की असंभावित उत्तराधिकारी: मौसी माँ

बाघ अभयारण्य प्रबंधन खुद को दो राहे पर पा रहा था। वे या तो शावकों को बेहोश करके उन्हे तब तक कैद में रख सकते थे जब तक वे अपने आप जीवित रहने लायक बड़े न हो जाएँ, या फिर उन्हें प्राकृतिक आवास में छोड़ सकते थे, उन पर कड़ी नजर रख सकते थे, और उम्मीद कर सकते थे, कि प्रकृति अपना काम करेगी। शावकों को जंगल में ही रखने का फैसला किया गया, जहां अग्रिम पंक्ति के कर्मचारी इनकी हर गतिविधि पर नजर रखेंगे।

छह दिनों तक शावक अच्छी तरह से जंगल के माहौल में ढलते हुए, सामान्य व्यवहार करते और स्वस्थ दिखाई देते रहे। लेकिन 24 मार्च की सुबह एक और दुखद घटना तब हुई जब एक शावक को दूसरे वयस्क बाघ ने लड़ाई में मार दिया। केवल तीन शावक बचे होने के कारण, रिजर्व के कर्मचारियों ने अपने प्रयास तेज़ कर दिए और जीवित बचे भाई-बहनों पर बढ़ती चिंता के साथ नजर रखी।

अप्रैल के अंत में, शावक नजरों से ओझल हो गए। कई दिनों तक खोजबीन के बाद भी कोई नतीजा नहीं निकला और उम्मीदें धूमिल होने लगी। फिर मानो कुदरत का ,एक चमत्कार हुआ, वन विश्राम गृह को मानव बस्तियों से जोड़ने वाली सड़क पर निगरानी दल ने सात बाघों के एक समूह को देखा एक ऐसा नजारा जो इसे देखने वाले सभी लोगों की यादों में बस गया।

समूह का नेतृत्व एक वयस्क बाघिन कर रही थी, जिसके साथ उसके छह शावक थे। भाग्य से एक असाधारण मोड़ पर निगरानी दल ने तीन शावकों की पहचान उनही के रूप में की जिनकी उन्हे तलाश थी। यह वयस्क बाघिन कोई और नहीं, बल्कि मृतक माँ की बहन थी, जिसने शावकों को गोद लेकर उन्हे अपने तीन बच्चों के साथ पाल रही थी। मौसी माँ की भूमिका निभाई थी। बाघ एकाकी प्राणी होते है और कमजोरों का शिकार करने के लिया जाने जाते है। इस बाघिन का अपनी बहन के शावकों को न केवल स्वीकार करना, बल्कि उनकी देखभाल भी अपने बच्चों की तरह करना किसी चमत्कार से कम नहीं था। इन अनाथ शावकों के साथ उसका बंधन इतना मजबूत था, मानो वे उसके अपने हों, प्रकृति के नियमों और वन्यजीव विशेषज्ञों की अपेक्षाओं को चुनौती देते हुए। निगरानी दल ने बाघिन के व्यवहार को आश्चर्य से देखा, वह सभी शावकों को समान स्नेह से पाल रही थी। इस बात का पूरा ध्यान रख रही थी की सभी को उसकी देखभाल और सुरक्षा मिले। जंगल में जीवित रहने के लिए आवश्यक कौशल भी उन्हें सिखा रही थी। करुणा और अस्तित्व की यह जीवन में एक बार घटित होने वाली कहानी प्रकृति में विद्यमान नाजुक संतुलन और प्रत्येक बाघ के जीवित रहने के संघर्ष की याद दिलाती है। यह कहानी हम सभी को मानव जीवन के मूल्यों एवं प्रकृति की ओर हमारे दायित्व को दुबारा से सोचने पर विवश कर देती है।

संकलन: ब्लॉग - टाईगर सफारी इंडिया यू ट्यूब इंडिया मास्टर माइण्ड्स

संदीप दानी
वरिष्ठ पयवेक्षक (स्याही कारखाना)

भय बिनु होइ ना प्रीति से प्रबंधन की अहम शिक्षा

हाल ही में भारत पाकिस्तान के मध्य हुये घटनाक्रम (ऑपरेशन सिंदूर) का एक प्रैस कोन्फ्रेंस में विस्तृत विवरण देते हुये हमारे देश के वायु सेना प्रमुख ने बयान के दौरान रामचरित मानस की एक चौपई विनय न मानत जलधि जड़ गए तीन दिन बीत, बोले राम सकोप तब भय बिनु होइ ना प्रीति को प्रमुखता से कहा था, जिसका सीधा अर्थ है कि जब अनुनय- विनय से काम ना चले तब एक ही रास्ता शेष रहता है वह है भय जिसके आधार पर आप वह समस्त कार्य करवा सकते हैं जिसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती।

वर्तमान वैश्विक परिदृश्य एक कल्पना से कम नहीं है प्रत्येक देश अपने पड़ोसी देश से अधिक शक्तिशाली बनना चाहता है, उसका प्रमुख कारण है जब-जब राजनीतिक एवं कूटनीतिक वार्तालाप से काम ना चले तब किसी भी स्थिति के लिए तैयार रहना। जिसमे महत्वपूर्ण है सामरिक सुरक्षा अर्थात जब भी कोई अन्य देश उसकी संप्रभूता पर हमला करने की कोशिश करे तब-तब उसके मन में शंका रहे कि इसके विपरीत .या प्रतिक्रिया झेलने पड़ सकती है जिसका सीधा संबंध है भय से।

प्रबंधन के दृष्टिकोण से- हमें अपने जीवन में प्रत्येक स्तर पर प्रबंधन कि आवश्यकता होती है जिसमे दैनिक जीवन से लेकर कार्यस्थल तक का प्रबंधन सम्मिलित होता है। कार्यस्थल पर प्रायः देखा जाता है कि अधिकांशतः कार्यों का क्रियान्वयन नैतिक एवं सैद्धांतिक तरीकों से करना होता है जो कि सर्वोपरि है।

कार्यस्थल पर जब कुछ कार्यों का क्रियानवन नैतिक एवं सैद्धांतिक तरीकों से ना हो रहे हो तब आपके पद के उत्तरदायित्वों के साथ कुछ अधिकार दिये जाते हैं जिन्हें दिये गए उतरदायित्वों को पूरा करने में उपयोग करने से परहेज नहीं करना चाहिए। आपके द्वारा लिए गए एक कठोर फैसले का असर अन्य कई कार्यों के सुचारु क्रियान्वयन में सहायक सिद्ध हो सकता है एवं इसके दूरगामी परिणाम कई गुना सुखद एवं संस्थान के हित में होने की संभावना हो सकती है। मानवीय पहलू से देखा जाए तो भय का उतना ही अधिक महत्व है, जितना कि नैतिकता एवं सिद्धांतों का।

आशीष कुमार खरे
पर्यवेक्षक (तकनीकी नियंत्रण)

मॉरीशस का रहस्यमयी मूड़िया पहाड़

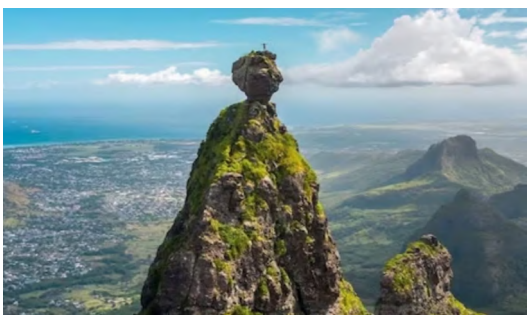

मॉरीशस एक छोटा सा द्वीप है, लेकिन इसका मूड़िया पहाड़ इतना ऊँचा और प्रभावशाली है कि देश केकिसी भी कोने से इसे देखा जा सकता है। यह ऐसा दिखता है, मानो कोई पाषाणी मानव हो। आप मॉरीशस का भ्रमण कर रहे हों तो ऐसा संभव ही नहीं कि आप इसकी ओर आकृष्ट न हों। यूं तो इस पर्वत का नाम 'पीटर बॉथ' है लेकिन स्थानीय लोग इसे इसकेआकार और जनश्रुति के कारण 'मूड़िया पहाड़' ही कहते हैं। कठोर ऊंची चट्टानों के बीच एक दर्दभरी प्रेम कहानी छिपी है, जो आज भी मॉरीशस के गांवों में सुनाई जाती है।

कहते हैं, मॉरीशस के पूर्वी तट पर एक सुंदर, शांत गाँव बसा हुआ था। उसके चरणों को समुद्र का नीला जल धोता, और पश्चिम की ओर विशाल पर्वत उसके मुकुट-सा शोभायमान रहता। यहाँ की कलकल करती नदियाँ, अपनी मस्ती में निर्मल बहते झरने और यहाँ के जंगल सुगंधित फूलों और रसीले फलों से लदे रहते। गाँव के लोग गन्ने और फलों की खेती करते, और अपनी सरल जीवनशैली में मग्न रहते।

इसी गाँव में एक अल्हड़, तेजस्वी युवक-जिसकी चाल में झरनों सी मस्ती थी, स्वभाव में नदियों की बेफिक्री, आँखों में समुद्र की गहराई, और वाणी में गन्ने की मिठास। जब पूर्णिमा की रातें आतीं, और मॉरीशस की पहाड़ियों पर चाँदनी बिखर जाती, तब उसकी बांसुरी की मधुर तान घाटियों में गूंज उठती। कहते हैं, उसकी इसी बांसुरी की धुन पर एक स्वर्गीय परी मोहित हो गई।

ओह! तुम कितनी सुंदर बांसुरी बजाते हो, ऐसा लगता है जैसे साक्षात कृष्ण कन्हैया मॉरीशस की धरती पर उतर आए हों। परी ने अचानक प्रकट होकर अपनी प्रसन्नता जताई। अचानक आई आवाज से युवक की बांसुरी की तान में व्यवधान पड़ गया। युवक ने सिर उठाकर चौंककर पूछा, तुम कौन हो? हमारे गाँव की तो नहीं लगती?

मैं आसमान से आई हूँ। एक बार फिर बांसुरी बजाओ न! परी ने मुस्कुराते हुए आग्रह किया। युवक ने चुटकीली, पहले तुम परियों का नृत्य दिखाओ! परी खिलखिलाई, सच? देखना चाहोगे परियों का नाच? चलो मेरे साथ।

उसने पर्वत की चोटी की ओर इशारा किया, रात के ठीक बारह बजे वहाँ हम परियाँ नृत्य करती हैं। देखना चाहते हो तो मेरे साथ चलो। उस रात से, हर आधी रात, वह युवक पहाड़ की चोटी पर जाने लगा। वहाँ परियों के नृत्य का जादू उसे बाँध लेता। युवक की मस्ती जैसे गायब हो चुकी थी। वह दिनभर खोया-खोया रहता और संध्या होते ही पहाड़ की ओर चल देता। परियों ने भी उसे स्वीकार कर लिया, पर एक शर्त रखी-इस रहस्य को कभी किसी से साझा मत करना, वरना विनाश निश्चित है।

समय बीतता गया। युवक की शादी हो गई, लेकिन उसका मन परियों के नृत्य में ही अटका रहा। हर रात वह घर से निकल जाता, और उसकी नवविवाहिता पत्नी प्रतीक्षा में दीपक की लौ तकती रहती।

आखिरकार, पत्नी ने एक दिन पूछ ही लिया, अगर किसी और से प्रेम था, तो मुझसे ही ब्याह क्यों? युवक हड़बड़ा गया, कौन कहता है कि मैं किसी और के पास जाता हूँ? तो फिर रात-रात भर कहाँ रहते हो? यह मैं नहीं बता सकता, उसने सिर झुका लिया। सच बताओ, वरना मैं अपनी जान दे दूंगी।

अंततः युवक ने सब कुछ कह सुनाया लेकिन इस स्वीकारोक्ति ने उसका भाग्य बदल दिया। अगली रात जब वह पर्वत की चोटी पर पहुँचा, तो वहाँ केवल एक ही परी खड़ी थी। उसकी आँखों में क्रोध की ज्वाला धधक रही थी। तुमने हमें धोखा दिया..., परी का क्रोध सातवें आसमान पर था। मेरी बात.... युवक की बात पूरी होने से पहले ही परी फिर दहक उठी, अब इसका दंड भोगो।

परी ने एक हाथ उठाया-युवक का दायाँ हाथ गायब हो गया। फिर दूसरा हाथ उठाया-बायाँ हाथ भी विलीन हो गया। अब पत्थर बन जाओ, ताकि यह रहस्य किसी और तक न पहुँचे। कहते हैं, तभी से वह युवक उस पर्वत की चोटी पर पत्थर बनकर खड़ा है। और तब से उस पहाड़ को मूड़िया पहाड़ कहा जाता है।

अमन कुमार
वरिष्ठ कार्यालय सहायक (कैन्टीन)

कहा गई हमारी संस्कृति

गाँव बेचकर शहर खरीदा, कीमत बड़ी चुकाई जीवन के उल्लास बेच के, खरीदी हमने तन्हाई है ।।

बेचा है ईमान धर्म तब, घर में शानो शौकत आई है। संतोष बेच, तृष्णा खरीदी, देखो कितनी मंहगाई है ।।

बीघा बेच कर स्कवायर फिट खरीदा, ये कैसी सौदाई है। संयुक्त परिवार के वट वृक्ष से टूटी, ये पीढ़ी मुरझाई है ।।

रिश्तों में है भरी चालाकी, हर बात में दिखती चतुराई है।

कहीं गुम हो गई मिठास, जीवन से, हर जगह कड़वाहट भर आई है ।।

रस्सी की बुनी खाट बेच दी, मैट्रेस ने जगह बनाई है।

अचार, मुरब्बे को धकेल कर, शो केस में सजी दवाई है ।।

माटी की सोंधी महक बेच के, रुम स्प्रे की खुशबू पाई है।

मिट्टी का चुल्हा बेच दिया, आज गैस पे बेस्वाद सी खीर बनाई है ।।

पांच पैसे का लेमन चूस बेचा, तब कैडबरी हमने पाई है।

बेच दिया भोलापन अपना, फिर मक्कारी पाई है ।।

सैलून में अब बाल कट रहे, कहाँ घूमता घर- घर नाई है।

दोपहर में अम्मा के संग, गप्पे मारने क्या कोई आती-चाची-ताई है ।।

मलाई बरफ के गोले बिक गये, तब कोक की बोतल आई है। मिट्टी के कितने घड़े बिक गये, तब फ्रिज में ठंढक आई है ।।

खपरैल बेच फॉल्स सीलिंग खरीदा, हमने अपनी नींद उड़ाई है। बरकत के कई दीये बुझा कर, रौशनी बल्बों में आई है ।।

नालंदा बागडे
वरिष्ठ प्रचालक (नियंत्रण)

अमर बेल की चोरी

बहुत दिन हुए, बेबीलोनिया में एरीच नाम का एक नगर था। जीलगामेश वहां का राजा था। उसने नगर के चारों ओर एक बड़ी ऊंची दीवार खड़ी की थी और उसमें एक आलीशान मन्दिर भी बनवाया था।

जीलगामेश अत्यन्त ही रूपवान व्यक्ति था। इसके साथ-साथ उसके शरीर में अपार शक्ति थी। इसीलिए नगर की प्रजा उससे हमेशा भयभीत रहती थी। वे भगवान् से प्रार्थना करते रहते थे कि उनको अभयदान दिया जाए।

उनकी प्रार्थना सुनकर देवताओं को दया आई। उन्होंने अनकीदू नाम के एक आदमी को जन्म देकर एरीच में भेजा। उन्होंने सोचा, अनकीदू जीलगामेश के समान ही बलशाली होगा और वह उसको सम्भाल कर नगरवासियों को अभयदान प्रदान करेगा। इस प्रकार अनकीदू एरीच आया और जीलगामेश के साथ उसकी लड़ाई होने लगी। काफी देर तक दोनों योद्धाओं की लड़ाई होती रही, परन्तु अन्त में जीत हुई जीलगामेश की लेकिन अनकीदू का शौर्य देखकर जीलगामेश बहुत प्रसन्न हुआ। इसीलिए जब लड़ाई खत्म हुई तब दोनों मित्र बन गये और भविष्य में आपस में लड़ाई नहीं करने की प्रतिज्ञा कर ली।

इसके बाद दोनों प्रतापी मित्र साहसपूर्ण कार्य करने निकले। वे एरीच से काफी दूर निकल गये और सरों के जंगल में पहुंच कर, उसके रखवाले को, जो एक भयानक दैत्य था, मार डाला और वहां की बहुत-सी लकड़ियों को काट-काटकर अपने नगर में लाते रहे। किन्तु जीलगामेश और अनकीटू की सफलता ने अन्यों के हृदय में प्रेम अथवा घृणा की भावना उत्पन्न कर दी थी। इसीलिए एरीच की नगर-रक्षिका इत्सर ने जीलगामेश के साथ शादी करनी चाही। उसने शादी का प्रस्ताव भी भेजा, परन्तु जीलगामेश ने उसे अस्वीकार कर दिया।

इस पर इत्सर को बहुत ठेस लगी। उसने देवताओं से प्रार्थना की कि वे एक जंगली बैल को एरीच भेजें, जो नगर को तहस-नहस कर सकता था। देवताओं ने उसकी पुकार सुन ली और उन्होंने एक अत्यन्त शक्तिशाली जंगली बैल को एरीच में भेज दिया। बैल आया और उसने नगर में तोड़-फोड़ शुरू कर दी परन्तु जीलगामेश और अनकीदू ने मिलकर उस जंगली बैल को भी जान से मार डाला। अब तो एरीच की प्रजा खुशियां मनाने लगी परन्तु देवताओं द्वारा भेजे गये उस पवित्र बैल के मरते ही दोनों योद्धाओं का पतन शुरू हो गया। देवताओं ने अनकीदू को शाप दिया, और वह उसी दिन से बीमार हो गया और कुछ ही दिनों में मर गया। जीलगामेश ने अपने परम मित्र को मरते देखा तो स्वयं डर-सा गया। मित्र की मृत्यु पर वह बहुत रोया। उसके अन्तिम क्रियाकर्म के बाद उसने अपने शिल्पकारों को आदेश दिया कि वे सोने और हीरों की अनकीदू की एक विशाल मूर्ति बनाएँ।

इसके बाद जीलगामेश सोचने लगा, मृत्यु कितनी बुरी होती है, जो दो परम मित्रों को भी अलग-थलग कर सकती है। .या इससे बचना सम्भव नहीं है? उसे पहले से मालूम था कि यूनान में नोवा नाम का एक आदमी रहता है जिसे अमरता प्राप्त हो चुकी है। अब वह उसकी खोज में निकल पड़ा। इसके लिए उसे बहुत लम्बी यात्रा करनी पड़ी। रास्ते में बड़े-बड़े पर्वतों को लांघा। एकाध बार उसे बहुत तेज तूफान के बीच से गुजरना पड़ा। जंगलों में जाते समय जंगली जानवरों के मध्य से भी निकलना पड़ा। इन सब कठिनाइयों के बावजूद उसे कई-कई दिनों तक भूखे-प्यासे रहना पड़ा। अन्त में वह नोवा के स्थान पर पहुंच गया।

उसने इस बारे में नोवा से बातचीत की। इसी व्यक्ति ने जल-प्लावन के समय संसार के एक जोड़ी जीवों को बचाया था और इसीलिए उसे अमरता प्राप्त हुई थी परन्तु नोवा अमरता प्राप्त करने का कोई रास्ता नहीं बता सका। उसने जीलगामेश को बताया कि एक बार भगवान् एनील ने संसार को जलमग्न करके उसे डुबो देना चाहा, क्योंकि पृथ्वी के कोलाहल से उसकी नींद भंग हो रही थी। एहा नाम के देव ने नोवा

को यह सूचना दे दी और उसने उसे यह भी आदेश दिया कि वह एक बड़ी नाव बना कर उसमें हर जीवधारी की एक-एक जोड़ी को उसमें रख ले। नोवा ने ऐसा ही किया। जब संसार जलमग्न हो गया तब नोवा अपनी पत्नी और जीवों की जोड़ी के साथ उस नाव में चला गया। इस प्रकार जब बाढ़ शांत हुई, तब एहा ने भगवान् एनील को शांत किया और नोवा और उसकी पत्नी को अमरता प्रदान करवाई, .क्योंकि जल-प्लावन के समय पति-पत्नी ने ही पृथ्वी के जीवों की रक्षा की थी। अब जीलगामेश नोवा के घर से हताश होकर लौटने ही वाला था कि उसकी पत्नी को उस पर दया आ गई। उसने जीलगामेश को बताया कि समुद्र में एक प्रकार की वनस्पति पायी जाती है जिसका सेवन करने से शरीर में हमेशा यौवनात्रस्था बनी रहती है।

जीलगामेश उसकी खोज में समुद्र की ओर चल पड़ा। वहां पहुंचकर उसने अपने पैरों में एक भारी पत्थर बांधा और समुद्र में डुबकी लगा दी। गहरे समुद्र में उसे वह वनस्पति मिल गई। वह उसे लेकर खुशी-खुशी ऊपर आया। उसने सोचा कि वह अपने नगर में चलकर इसे खायेगा और अपने नगरवासियों को भी खिलायेगा परन्तु जब वह समुद्र में नहा रहा था तब एक सांप उस वनस्पति को चुराकर भाग खड़ा हुआ। इस प्रकार जीलगामेश की आशा निराशा में बदल गयी और वह भारी मन से एरीच लौटा। अब उसे विश्वास हो गया कि मृत्यु जो सबको खा जाती है, उससे किसी को भी बचाया नहीं जा सकता।

ऐश्वर्या चौरे
कार्यालय सहायक (वित्त एवं लेखा)

जल है तो धरती है

एक बार की बात है, एक छोटे से गाँव में एक बच्चा अपने पिता से पूछता है?

पापा, अगर धरती पर पानी खत्म हो गया तो क्या होगा?

पिता मुस्कुराए और उसे यह तस्वीर दिखाई, जिसमें आधी धरती हाथ में है, उस पर एक हरा पेड़ उग रहा है और एक नल से पानी की बूँद टपक रही है।

उन्होंने कहा बेटा, धरती हमारी जिम्मेदारी है। जैसे इस तस्वीर में एक हाथ पुरी धरती को संभाले हुए है, वैसे ही हम सबको पानी और प्रकृति को संभालना होगा। अगर हम नल खुला छोड़ देंगे, बेवजह पानी बहाएँगे, तो एक- एक बूँद निकलकर व्यर्थ हो जाएगी। और याद रखना, जब आख़िरी बूँद गिरेगी, तब न पेड़ बचेंगे, न ज़मीन हरी रहेगी, न जीवन।

बच्चे ने उसी दिन से ठान लिया कि वह कभी पानी बर्बाद नहीं करेगा। वह गाँव में सबको समझाने लगा- हर बूँद कीमती है। पानी बचाओ, जीवन बचाओ।

धीरे-धीरे पूरा गाँव बदल गया। नल खुले नहीं छोड़े जाते, खेतों में सिंचाई होने लगी, और हर घर के आँगन में पेड़ लगाए जाने लगे।

इस तरह एक छोटे से बच्चे की सीख ने पूरे समाज को यह याद दिला दिया कि धरती माँ को बचाने के लिए हमें पानी बचाना ही होगा।

धर्मेंद्र कुमार यादव
तकनीशियन

एंटीक

बेटे और बहू की आज छुट्टी थी। वे लगभग चार घंटे बाद बाजार से लौटे थे। ढेर सारी चीजें खरीद लाए थे और लिविंग रूम और उन्हें अपने बेडरूम में सजाने की चर्चा कर रहे थे। उन चीजों में पुरानी घड़ी थी, टेबल लैंप था, कुछ कलाकृतियां थीं। धातु की बनी कुछ मूर्तियां, लकड़ी और कांच केबनावटी सामान भी थे। एक बहुत पुराना लकड़ी का नक्काशीदार मेज था, लालटेन और गगरी थी। दोनों बहुत चाव से सजा रहे थे।

सोमेश आश्चर्यचकित थे। एक कोने पर बैठे एकटक उन्हें देख रहे थे। अचानक उन्हें खांसी आ गई। बेटा तुरंत बोला, 'पापा, आज रात भर खांसने का इरादा है क्या? कल ऑफिस जाना है। जरूर नींद खराब करोगे!'

बहू बोली, 'पापा को मना किया है कि बरसात के मौसम में दही न खाया करें, लेकिन मानते नहीं।' सोमेश सकुचाते हुए बोले, 'बहू, दही तो मैंने पिछले कई दिनों से खाया ही नहीं है। कभी-कभी खांसी आ ही जाती है। बहुत देरे से चाय पीने की इच्छा है। तुम लोग चाय पियोगे तो मेरे लिए भी एक कप बना देना।'

पापा! पहले यह सामान लगेगा फिर चाय बनेगी।'हां! आपको अपना कमरा शिफ्ट करना पड़ेगा। आपकी बेड स्टडी रूम में लगा देते हैं। इन सामानों के लिए जगह कम पड़ रही है!' सोमेश हतप्रभ होकर कभी एंटीक कहे जाने वाले सामान के ढेर देखते, कभी अपने बहू-बेटे को और कभी अपने बुढ़ापे को!

अनुपमा सिंह
कार्यालय सहायक (वित्त एवं लेखा)

मेट्रो की तस्वीर

मेट्रो की एक तस्वीर ने बदल दी किस्मत गेम ऑफ़ थ्रोन्स स्टार के संग बैठे भारतीय युवक की अनसुनी दास्तान हुई जर्मनी में वायरल किस्मत सच में अजीब खेल खेलती है जर्मनी की मेट्रो में एक हताश भारतीय युवक के बगल में बैठी थीं 'गेम ऑफ़ थ्रोन्स' की स्टार मेसी विलियम्स खाली जेब, बिना परमिट और अनिश्चित भविष्य से घिरे इस युवक को यह तक मालुम नहीं था कि उसके साथ बैठी लड़की लाखों लोगों की पसंदीदा अभिनेत्री है।

रेल में ली गई एक तस्वीर सोशल मीडिया पर आग की तरह फैली और जर्मनी की प्रतिष्ठित मैगज़ीन 'डेर स्पीगल' इस अनजान युवक की खोज में निकल पडी। म्यूनिख में उसका अस्थाई ठिकाना मिला जहाँ वह गैर-कानूनी तरीके से गुज़ारा कर रहा था। पत्रकार के पूछने पर उसका जवाब दिल छू लेने वाला था जब पेट खाली हो और रहने का परमिट न हो, तब परवाह नहीं रहती की बगल में कौन बैठा है। उसकी इमानदारी, संघर्ष और सच्चाई ने मैगजीन का दिल जीत लिया। उसे 800 यूरो सैलरी पर पोस्टमैन की नौकरी मिली और उसी नौकरी ने उसे तुरंत रिहायशी परमिट भी दिलवा दिया। यह कहानी बताती है कि ज़िंदगी का हर मोड एक स्क्रिप्ट की तरह जड़ा होता है। कब, कहाँ और कैसे किस्मत आपका हाथ थाम ले- कहना मुश्किल है।

संघर्ष करते रहिए, क्योंकि नियति का लिखा कोई मिटा नहीं सकता।

परदीप कुमार शर्मा
सयुक्त महाप्रबंधक - स्याही कारखाना

फुर्र-फुर्र

एक जुलाहा सूत कातने के लिए रुई लेकर आ रहा था। वह नदी किनारे सुस्ताने के लिए बैठा ही था कि जोर की आँधी आई। आँधी में उसकी सारी रुई उड़ गई। जुलाहा घबराया-अगर बिना रुई के घर पहुँचा तो मेरी पत्नी तो बहुत नाराज़ होगी। घबराहट में उसे कुछ न सूझा। उसने सोचा, यही बोल दूँगा-फुर्र-फुर्र। और वह फुर्र-फुर्र बोलता जा रहा था। आगे एक चिड़ीमार पक्षी पकड़ रहा था।

जुलाहे की फुर्र-फुर्र सुनकर सारे पक्षी उड़ गए। चिड़ीमार को बहुत गुस्सा आया। वह जुलाहे पर बहुत चिल्लाया तुमने मुझे बरबाद कर दिया। आगे से तुम ऐसा कहना, पकड़ो! पकड़ो! जुलाहा जोर-जोर से पकड़ो! पकड़ो! रटता गया। रास्ते में कुछ चोर रुपए गिन रहे थे। जुलाहे की पकड़ो! पकड़ो! सुनकर वे घबरा गए। फिर उन्होंने देखा कि अकेला जुलाहा ही चला आ रहा था। चोरों ने उसे पकड़ा और घूरते हुए कहा-यह क्या बक रहे हो? हमें मरवाने का इरादा है क्या? तुम्हें कहना चाहिए, इसको रखो, ढेरों लाओ, समझे ?

जुलाहा यही कहता हुआ आगे बढ़ गया-इसको रखो, ढेरों लाओ। जब वह श्मशान के पास से गुजर रहा था तो वहाँ गाँव वाले शवों को जला रहे थे। उस गाँव में हैजा फैला हुआ था। लोगों ने जुलाहे को कहते सुना, 'इसको रखो, ढेरों लाओ', तब उन्हें बड़ा गुस्सा आया। वे चिल्लाए, तुम्हें शर्म नहीं आती है? हमारे गाँव में इतना भारी दुख फैला है और तुम ऐसा बकते हो। तुम्हें कहना चाहिए यह तो बड़े दुख की बात है।

जुलाहा शर्म से पानी-पानी हो गया। वह यही रटता हुआ आगे बढ़ने लगा-यह तो बड़े दुख की बात है। कुछ देर बाद वह एक बारात के पास से गुजरा। बरातियों ने उसे यह कहते हुए सुना, 'यह तो बड़े दुख की बात है, यह तो बड़े दुख की बात है।' इतना सुनकर वे जुलाहे को पीटने के लिए तैयार हो गए। बड़ी मुश्किल से उसने सफाई दी तो उन्होंने कहा-- सीधे से आगे बढ़ो, और हाँ, अब तुम यह रटते जाना-भाग्य में हो तो ऐसा सुख मिले। अब जुलाहा यही रटता हुआ अपनी राह चल पड़ा। चलते-चलते अँधेरा हो गया। घर से निकलते समय उसकी पत्नी ने उससे यही कहा था कि जहाँ रात हो जाए वहीं सो जाना।' जुलाहा थक भी गया था। वह वहां सो गया।

अगले दिन जब सुबह उसके मुँह पर पानी पड़ा, तब जुलाहा हड़बड़ा कर उठा। आँखें खोलीं तो देखता ही रह गया-यह तो उसी का घर था। और अभी-अभी उसकी पत्नी ने ही उस पर पानी फेंका था। जुलाहे के मुँह से निकला-भाग्य में हो तो ऐसा सुख मिले।

अनिल कुशवाहा
वरिष्ठ कार्यालय सहायक (वित्त एवं लेखा)

टीचरः नेता जी,
आपका बेटा फेल हो गया है
और आप लड्डू खिला रहे हो?
नेता जीः 80 लड़कों की क्लास में 60 फेल हैं....
बहुमत तो मेरे बेटे के साथ है.....

ग्राहक : वैसे आपके होटल में सफाई बहुत
ध्यानपूर्वक की जाती है..
मैनेजर (खुश होकर) : धन्यवाद !
आपको किस बात से ऐसा एहसास हुआ ?
ग्राहक : ऐसा आभास तब हुआ
जब किसी ने होटल में
घुसते ही मेरी जेब की सफाई कर दी !!

जुलाहा स्वर्ग कैसे गया ?

किसी जुलाहे के खेत में हर रात देवराज इंद्र का हाथी ऐरावत आता था। वह आकाश से उतरता और रात भर उसके खेत में चरता। सुबह अपने खेत की हालत देखकर जुलाहे के कलेजे पर आघात लगता। उसने भाई लोगों से पूछा कि उसके खेत को कौन बर्बाद कर जाता है। उन्होंने कहा, यह गाँव की चक्कियों की करतूत हो सकती है। शायद उनके पाट रात को तुम्हारे खेत में जाते हों। सो जुलाहे ने गाँव की तमाम चक्कियों के पाट रस्सी से बाँध दिए, पर उसके खेत की बर्बादी नहीं रुकी। उसने फिर बिरादरी वालों से सलाह ली। बिरादरी वालों ने कहा, यह धान कूटने की ओखलियों का काम लगता है। हो सकता है सबके सो जाने के बाद गाँव की ओखलियाँ चुपके से तुम्हारे खेत में जाती हों। सो उसने गाँव की सारी ओखलियों को रस्सी से बाँध दिया, पर वही ढाक के तीन पात! उल टे खेत की बर्बादी और बढ़ गई।

सो एक रात वह अपने खेत में जाकर लेट गया और इंतज़ार करने लगा। वह .क्या देखता है कि एक हाथी उड़ता हुआ आया और फसल चरने लगा! जब हाथी वापस जाने लगा तो उसने उसकी पूँछ पकड़ ली और उसके साथ स्वर्ग चला गया। वहाँ इंद्र का अखाड़ा लगा हुआ था। अप्सराएँ नाच-गा रही थीं। किसी ने जुलाहे की ओर ध्यान नहीं दिया। भूख लगने पर वह देवताओं की रसोई में गया और जमकर दिव्य व्यंजन खाए। अगली रात को जब ऐरावत पृथ्वी पर जाने लगा तो उसकी पूँछ से लटककर जुलाहा वापस घर आ गया।

धरती पर वापस आते ही जुलाहे ने घर वालों और मित्रों को अपनी रोमाँचक यात्रा के बारे में बताया और कहा इस घटिया जगह पर रहने से क्या फ़ायदा! चलो, सब इंद्रलोक चलें! सब राज़ी हो गए। पृथ्वी की फसल का भोजन करके ऐरावत वापस जाने लगा तो जुलाहे ने उसकी पूँछ पकड़ ली और उसकी पत्नी ने पति के पाँव पकड़ लिए। इसी तरह बाक़ी जुलाहे भी एक-दूसरे के पाँव पकड़कर लटक गए। ऐरावत ने संभवतः इस मानव शृंखला पर कोई ध्यान नहीं दिया और ऊपर उड़ चला। देखते-देखते वे काफ़ी ऊपर आ गए। जुलाहे ने सोचा, मैं भी कैसा मूर्ख हूँ! अपना करघा लाना ही भूल गया! यह सोचते हुए उसने अफ़सोस से अपने हाथ मले। सो हाथी की पूँछ उसके हाथों से छूट गई और सब वापस धरती पर आ गिरे।

इसीलिए यह कहा जाता है कि जुलाहा कभी स्वर्ग नहीं जा सकता।

रोहित गोयल
कनिष्ठ कार्यालय सहायक (सू.प्रौ.)

दोस्त : कैसे हो यार...
पप्पू: बस ठीक हूँ..,
दोस्त : भाई कुछ पैसों की ज़रूरत हैं
पप्पू : मुझे भी यार, कोई दे रहा हैं
तो बता देना...

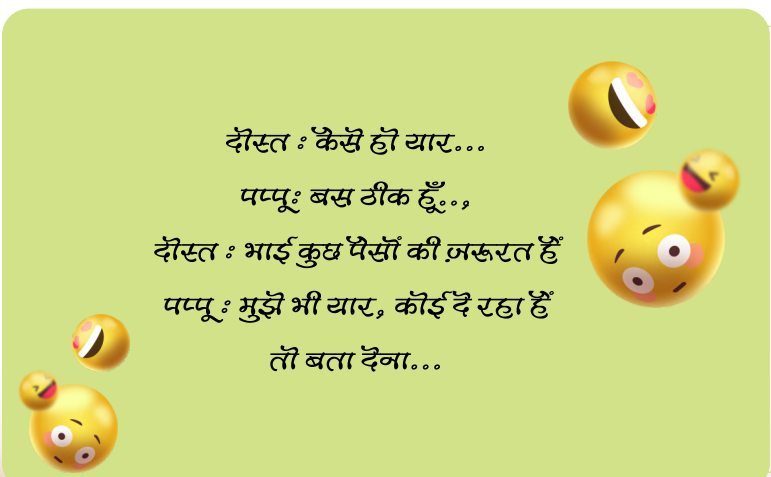

पत्नी ने अपने पति को फोन लगाया
पत्नी कहां हो?
ऑफिस पहुंच गए क्या ?
पति: अरे मेरा कार से एक्सीडेट हो गया।
मेरी टांग टूट गई है
अस्पताल जा रहा हूं
पत्नी: अच्छा ठीक है, जाओ
टिफिन का ध्यान रखना
टेड़ा ना हो जाये नही तो दाल गिर जायेगी...

कृत्रिम बुद्धियुक्त मानव (रोबोट)

दुनिया के वैज्ञानिक बीसवीं सदी की शुरुआत से ही दो तरह के कृत्रिम मानव विकसित करने के प्रयासों मे लगे हैं। एक 'एंड्राइड' यानि कृत्रिम मानव और दूसरा 'सायबोर्ग' यानि मशीनी मानव। वैज्ञानिकों को ऐसे मानव बनाने की कल्पना गल्प साहित्य से मिली। साहित्य और विज्ञान दो ऐसे विषय हैं, जो वर्तमान को भूतकाल और भविष्य को वर्तमान बना देने की सामर्थ्य रखते हैं। उद्योगों में मानवीय श्रम करने वाले ये मशीनी मानव अब कृत्रिम मेधा से स्वयमेव संचालित होते हुए सहस्त्र बुद्धि मशीनी मानव बनते जा रहे हैं। इस कृत्रिम बुद्धि का कमाल हैं की अब इन्हें किसी विशेषज्ञ मनुष्य को निर्देशित करने की जरूरत नहीं रह जाएगी, बल्कि इसकी तंत्रिकाओं मे कृत्रिम रूप से विकसित किए गए बुद्धि-तंत्र से ये स्वयमेव क्रियाशील रहेंगे। चैट-जीपीटी और चैट बोट्स सॉफ्टवेर इनके वे औज़ार होंगे, जो इन्हें शब्द गढ़ने की उन्नत सामर्थ्य से बहुभाषी बनाएँगे और समस्याओं के समाधान की दिशा मे स्वतः सक्रिय हो जाएंगे।

कई देशों के वैज्ञानिक 'एंड्राइड' और सायबोर्ग' रूपों में कृत्रिम मानव बनाने के प्रयास में लगे हैं। एंड्राइड का अर्थ ऐसे मानवों से हैं, जो सिर्फ कार्बनिक यौगिकों से प्रयोगशाला में बने हों और पूरी तरह बनावटी हों। इनकी संरचना इन्सानों से मिलती-जुलती होती हैं, इसलिए इन रोबोट को 'ह्यूमन रोबोट' भी कहा जाता हैं। वैसे एंड्राइड शब्द को हम 'एंड्राइड' मोबाइल के रुप में खूब जानते हैं। बैटरीयुक्त चलते-फिरते गुड्डे-गुड़ियाँ इसी श्रेणी में आते हैं। वर्तमान दुनिया में अनेक प्रकार के कृत्रिम मानवीय आकार के रोबोट आविष्कृत किए जा चुके है। जिनमे से कई अपने कृत्रिम बुद्धि से किए गए कार्यों से चर्चा मे भी आ चुके हैं। ये मानव समुदायों के बीच विभिन्न प्रकार की भूमिकाओं का निर्वहन कर रहे हैं। इनमें 'एडा' ऐसी मादा रोबोट है, जिसे दुनिया की पहली 'रोबोट आर्टिस्ट' माना गया हैं। इसकी आँखों में कैमरा और चीजों को ग्रहण करने की लिए कृत्रिम मेधा का प्रयोग होता है। इसी तरह हाँगकाँग की कंपनी ने 'सोफिया' नाम के रोबोट को आकार दिया हैं। यह कृत्रिम मानव और बुद्धि के क्षेत्र में भविष्य की प्रतीक बन गई है। इसकी अद्भुत विलक्षणता है कि यह व्यक्ति कि कल्पनाशीलता की ग्राहण करने में सक्षम है। इसने अनेक टीवी शो और अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलनों में अपनी कृत्रिम बुद्धि का लोहा मनवाया है। इसने अति आधुनिक प्रज्ञा के जरिए नवीनतम अनुसंधानों मे अहम योगदान दिया है। सऊदी अरब ने तो इसे नागरिकता देकर इसके मनुष्य अवतार को स्वीकार्यता दे दी है। इसे शिक्षा, अनुसंधान और मनोरंजन के क्षेत्रों में काम करने की दृष्टि से ही विकसित किया गया है।

अब दुनिया स्त्री-पुरुष जैसे दिखने वाले रोबोटों के निर्माण से आगे निकल चुकी है। इस दौड़ में चीन सबसे आगे हैं। 'एंड्राइड' तकनीक आधारित कुत्ते, बिल्ली, तित्तली और अन्य जानवरों जैसे रोबोट अस्तित्व में आ चुके हैं। चीन ने अनूठे किस्म के सात सौ चालीस प्रकार के रोबोट तैयार किए हैं। ये रोबोट हमारे दैनिक कार्य में मदद करकेउन्हें सरलता से पूरा कर देते हैं। इसलिए इन्हें साथी मानवीकृत (कंपैनियन ह्यूमनाइड) रोबोट नाम दिया गया है। इनमें चाय, काफी, भोजन बनाकर परोसने वाले रोबोट तो हैं हीं, सफाई करने और बिखरे सामान को यथा-स्थान रखने वाले रोबोट भी है इसलिए इन्हें पेशेवर सेवक की श्रेणी में रखा गया है। ये मनुष्य जैसी बातचीत करने में भी सक्षम है।

भारत अब रोबोट निर्माण का बड़ा खिलाड़ी बनने की दिशा में पहल कर रहा है। रोबोट तकनीक में भारत अमेरिका, चीन, जापान, जर्मनी और दक्षिण कोरिया से बहुत पीछे है। सरकार रोबोटिक्स कारोबार में गति देने के नजरिये से राष्ट्रीय रणनीति लेकर आ चुकी हैं। भारत में फिलहाल रोगियों की शल्य चिकित्सा से लेकर आटोमोबाइल्स कारोबार में रोबोट का उपयोग हो रहा है। इसके वैश्विक कारोबार 6.7 अरब डालर तक पहुँच गया है। भारत अभी इस क्षेत्र में बहुत पीछे है। सभी क्षेत्रों मे मिलाकर लगभग 33 हजार रोबोट क्रियाशील हैं।

एक बात विचारणीय है कि अभी तक रोबोट को नए-नए रूपों में विकसित करने का काम वैज्ञानिक रूपी मनुष्य करता था, लेकिन प्रौध्यौगिकी के आकाश में कृत्रिम बुद्धि ने ऐसे पंख दे दिये है कि रोबोट अब कृत्रिम बुद्धिमता की मदद से स्वयं अद्यतन होने लगे हैं। रोबोट केस्वयमेव परिवर्तन और नए रोबोट पैदा करने की इस ताकत के परिणाम फलदायक होंगे या घातक, यह तो भविष्य के गर्भ में है।

प्रवीण सिन्हा
कार्यालय सहायक (कर्मशाला)

भारतीय संस्कृति और आधुनिकता का संगम

आज का भारत एक ऐसे मोड़ पर खड़ा है जहाँ एक ओर हमारी सदियों पुरानी समृद्ध परंपराएं हैं और दूसरी ओर वैश्विक आधुनिकता की तेज़ लहर। अक्सर यह बहस होती है कि क्या आधुनिक होने का अर्थ अपनी संस्कृति को भूल जाना है? वास्तविकता इसके विपरीत है। आधुनिकता और संस्कृति एक-दूसरे के विरोधी नहीं, बल्कि पूरक हो सकते हैं।

परंपरा की नींव पर आधुनिकता का निर्माण:

भारतीय संस्कृति 'वसुधैव कुटुंबकम' (पूरा विश्व एक परिवार है) और 'सर्वे भवंतु सुखिनः' के सिद्धांतों पर आधारित है। आधुनिकता हमें विज्ञान, तकनीक और तार्किक सोच प्रदान करती है। जब हम अपनी सांस्कृतिक जड़ों से जुड़कर आधुनिक तकनीक का उपयोग करते हैं, तो हम एक सशक्त और जागरूक समाज का निर्माण करते हैं। उदाहरण के तौर पर, आज का युवा योग और आयुर्वेद को आधुनिक विज्ञान के साथ अपना रहा है, जो विश्वस्तर पर सराहा जा रहा है।

बदलता सामाजिक परिवेश:

आज हमारी वेशभूषा, खान-पान और संचार के तरीकों में आधुनिकता झलकती है, लेकिन हमारे मूल्य-जैसे बड़ों का सम्मान, त्यौहारों का उल्लास और परिवार के प्रति समर्पण-आज भी जीवित हैं। डिजिटल युग ने हमें वैश्विक बना दिया है, लेकिन हमारी कला, संगीत और साहित्य हमें अपनी पहचान दिलाते हैं। आधुनिकता का अर्थ 'पश्चिमीकरण' (Westernization) नहीं, बल्कि विचारों की प्रगतिशीलता है।

चुनौतियाँ और समाधान:

निश्चित रूप से, आधुनिकता के प्रवाह में कई बार हम अपनी भाषा और नैतिकता को पीछे छोड़ देते हैं। आवश्यकता इस बात की है कि हम हंस की तरह बनें, जो दूध और पानी के मिश्रण में से केवल दूध (अच्छाई) को ग्राहण करता है। हमें आधुनिकता से केवल वह लेना चाहिए जो हमें बेहतर मनुष्य बनाए, न कि वह जो हमारी जड़ों को खोखला कर दें।

निष्कर्ष:

भारतीय संस्कृति एक विशाल वटवृक्ष की तरह है, जिसकी जड़ें पाताल तक गहरी हैं और शाखाएं खुले आसमान (आधुनिकता) को छूने का साहस रखती हैं। संस्कृति हमें संस्कार देती है और आधुनिकता हमें विस्तार। इन दोनों का समन्वय ही भविष्य के 'विकसित भारत' की पहचान होगा।

शितमाला चौहान
कनिष्ठ कार्यालय सहायक (भंडार)

पूजा के वक्त बीवी ने पति से पूछा
बीवी : सुनिए जी, आपको आरती याद है ना
पति : हाँ वही पतली सी, वही न?
इसकेबाद भगवन की बाद में पति की पूजा पहले हुई !!

पत्नी : अजी सुनते हो, दो किलो मटर ले लूं ?
पति : हां.. ले लो न, जो ठीक लग रहा है कर लो.
पत्नी : आपकी राय नहीं मांग रही हूं,
केवल पूछ रही हूं कि इतनी मटर आसानी से
छील लोगे या फिर कम लूं ?

जीवन: एक यात्रा, गंतव्य नहीं

अक्सर हम अपने जीवन को केवल लक्ष्यों की एक सूची मान लेते हैं-अच्छी शिक्षा, फिर नौकरी, फिर घर और अंततः सेवानिवृत्ति। हम इस भ्रम में रहते हैं कि इन लक्ष्यों को प्राप्त कर लेना ही जीवन है। परंतु वास्तव में, जीवन वह नहीं है जो किसी विशेष स्थान पर पहुँचने के बाद शुरू होता है, बल्कि जीवन वह है जो उस लक्ष्य तक पहुँचने की प्रक्रिया में हर पल घटित हो रहा है।

प्रक्रिया का आनंद:

जब हम केवल 'गंतव्य' पर ध्यान केंद्रित करते हैं, तो हम वर्तमान की सुंदरता को अनदेखा कर देते हैं। एक पर्वतारोही के लिए शिखर पर पहुँचना सफलता हो सकती है, लेकिन असली अनुभव उन कठिन रास्तों, ठंडी हवाओं और चढ़ाई के संघर्ष में छिपा होता है। यदि हम केवल गंतव्य की चिंता करेंगे, तो मार्ग के दृश्य छूट जाएंगे। 2025 की इस भागदौड़ भरी दुनिया में, जहाँ 'सफलता' का दबाव बहुत अधिक है, यह समझना आवश्यक है कि शांति बाहरी उपलब्धियों में नहीं, बल्कि आंतरिक संतोष में है।

अनुभव ही असली संपत्ति है:

यात्रा हमें सिखाती है, हमें बदलती है और हमारे व्यक्तित्व का निर्माण करती है। गंतव्य तो एक पड़ाव मात्र है। जीवन की इस यात्रा में मिलने वाले लोग, रास्ते में आने वाली बाधाएँ और उनसे मिलने वाली सीख ही हमारी असली पूँजी है। गिरना, संभलना और फिर से चलना ही जीवन की सार्थकता है।

निष्कर्ष:

जीवन का कोई अंतिम स्टेशन नहीं है। यह एक निरंतर प्रवाह है। हमें अपने आज को कल की चिंता में नहीं गँवाना चाहिए। जब हम जीवन को एक यात्रा के रूप में स्वीकार कर लेते हैं, तो असफलता का डर समाप्त हो जाता है और हर पल एक उत्सव बन जाता है।

मंगेश ढोरे
कनिष्ठ कार्यालय सहायक (वित्त एवं लेखा)

कड़वी घूंट

'दीदी, आपके घर में कौन आया हुआ है, नीचे बंदूक लिए पुलिस वाले खड़े हैं। मैं तो डर ही गई!' उसकी कामवाली बाई ने घर के अंदर घुसते ही नीमा से कहा। 'अरे! मेरे जेठ आए हुए हैं, बड़े नेता हैं। जल्दी से जाकर रात केडिनर की तैयारी कर। डाइनिंग टेबल पर कुछ ड्राई फ्रूट्स रखे हैं। साहब लोग के पास ले जाकर रख दे।' नीमा मुस्कुराते हुए बोली।

दीदी! दीदी जी!' 'अब क्या हुआ जो गला फाड़ रही है?'

'मेरे मरद के पास बस एक छोटी-सी बोतल मिली थी। पुलिस वाले उसे और उसकी दारू की बोतल दोनों को थाने उठाकर ले गए। यहां इतनी बोतलें खुली हैं और नीचे पुलिस भी है उठाकर ले जाएंगे साहब जी लोग को। बोलते हैं इस राज में सरकार ने शराब बंद किया हुआ है।' काम वाली की मुंहफटी सुनकर उसके पति और जेठ ने उसे गुस्से से देखा और अपनी कड़वी घूंट अंदर की।

लालचन्द्र गुप्ता
वरिष्ठ कार्यालय सहायक (क्रय)

मौसम की पहली बारिश

पहली बारिश की भीनी खुशबू कुछ तो याद दिलाती है।
घर की छत या माँ का आँचल, कहाँ मुझे ले जाती है ॥
नई किताबों की महक और स्कूल का पहला दिन।
कितना मुश्किल था रहना वहाँ यूँ माँ के बिन ॥
पहला अक्षर, पहली बात, पहली वो, कहानी।
याद मुझे अब तक है सब कुछ मुँह-जबानी ॥
बारिश की रिमझिम में टीचर का वो समझाना।
बाहर ना जाओ, वहीं क्लास में रखाओं तुम सब खाना ॥
यूँ कुछ फिर बन जाती कक्षा मस्ती का एक अड्डा।
इसका उसका सबने खाया एक दुजे का डब्बा ॥
जब पुरजोर झमाझम बरसते बादल लगातार।
स्कूल की हो जाती छूट्टी आते ही ये समाचार ॥
यूँ ही सब कुछ याद दिलाती है ये पहली बारिश।
फिर ये सब कुछ पर पाने की जगू जाती है ख्वाहिश ॥
फिर बन जाऊँ नन्हीं - मुन्नी कर लूँ सब नादानी।
झूम - झूम नाच लूँ जब फिर से बरसे पानी ॥
बरामदे में जब बैठ मैं यूँ ही भीगी-भागी।
माँ सिर पोछे टावेल से और भूख भी मेरी जागी ॥
वो स्वादिष्ट पकौड़े और माँ के हाथ की चाय।
जी लू, हँस लूँ, रो लूँ जो ये पल फिर से मिल जाए ॥
पहली बारिश की भीनी खुशबु कुछ तो याद दिलाती है।
घर की छत या माँ का आँचल, कहाँ मुझे ले जाती है ॥

धर्मेन्द्र रेनिवाल
सेवानिवृत्त कार्मिक

आपकी जेब में चल रहा जासूस

अक्षर आपको लगता है कि फोन में बस यही ऐप्स खतरा बनते हैं जिन्हें आप संदिग्ध मानते है तो आप बड़ी भूल कर रहे है। असल डर वही छुपा है जहाँ आप सबसे कम उम्मीद करते है बिल्कुल साधारण रोज इस्तेमाल होने वाले एंड्रॉयड ऐप्स में, ऐसे ऐप्स जो दिखने में बिल्कुल नॉमल है लेकिन अंदर छुपा कोड आपके फोन को मिनटो में खुली किताब बना देता है ये खतरा नया नही लेकिन अब ये पहले से कई गुना ज्यादा चालाक हो चुका है।

ऐप्स उतनी ही आसानी से डेटा चुरा लेते है जितनी आसानी से आप इन्हे इस्टॉल करते हैं और सबसे बड़ी बात यह है कि यूजर को पता तक नही चलता, मार्केट में आज ऐसे सेकडों ऐप्स मौजूद है जो फोन खुद का फोन .क्लीनर (विडीयो कन्वर्टर, फाइल मैनेजर, नोटिफिकेशन, बूस्टर या वॉलपेपर ऐप बनकर पेश करते है) नाम और आइकन इतने सिंपल होते है कि किसी को शक ही नही होत ये फोन से स्क्रीन रिकार्ड कर लेते है की-बोर्ड के बटन से ऐप पर ओवरले बना लेते ही और चुपचाप आपके फोन की हर चलती गतिविधि बाहर भेजने लगते है सबसे खतरनाक हिस्सा ये है कि ये ऐप्स हटाने पर भी पूरी तरह से फोन से नही हटते है कई बार से खुद को छिपाकर बैकग्राउंड में बने रहते है और युजर समझता है कि खतरा खत्म हो गया जबकि असल में यह खेल तब शुरू होता है ये ऐप्स अपने आपको युटीलिटी बताकर ऐसे परमिशन लेते है जिनकी उन्हें असल ये जरूरत ही नही होती। मिसाल के तौर पर एक सिंपल फोटो एडिटर ऐप को एसएमएस पढ़ने या नोटिफिकेशन एक्सेस की जरूरत ही नही है लेकिन लोग जल्दी में ओके दबा देते है यही एक क्लिक आपके फोन का कंट्रोल किसी अंजान सर्वर को को सौप देता है एक और वजह से ही ऐप्स धीरे-धीरे काम करते है एकदम से कोई बड़ा फ्राड नही करते। पहले आपके कॉन्टेक्ट लिस्ट की कापी की जाती है फिर लोकेशन, फिर ब्राउजिंग हिस्ट्री। क्रिमिनल्स, पूरा प्रोफाइल बनाते है और फिर सही टाइम देखकर बैंकिंग अटैक करते है। हालिया रिपोट बताती है कि मोबाइल मेलवेयर के केस पिछले कुछ महीनो में रिकार्ड स्तर पर पहुंच गए।

कई यूजर को तब पता चला जब उनके बैंक एकाउंट को बिना ओटीपी के पैसे निकल गए या उनके फोन में लॉगिन अलर्ट आने लगे जबकि फोन उनके हाथ में था। हमारे देश में ये खतरा और बड़ा है क्योंकि यहां थर्ड पार्टी ऐप्स और जल्दी डाउनलोड कल्चर बहुत आम है क्रिमिनल्स को बस इतना करना होता है कि एक ऐप में दो-तीन चमकदार फीचर डाल दो और बाकी काम यूजर खुद कर देता है फोन स्लो सिर्फ लौग नही कभी-कभी चेतावनी भी होता है कई केस में ये ऐप्स बैकग्राउंड में इतने एक्टिव रहते है कि फोन गर्म होने लगता है बैटरी जल्दी खत्म होने लगती है और डेटा यूज अचानक बढ़ जाता है।

यूजर्स अपना शेडयूल हमेशा गोपनीय रखे अपने डिजिटल पासवार्ड पर दोहरे प्रमाणिकरण का उपयोग करे।

प्रशांत महाजन
संयुक्त महाप्रबंधक (त.प्र.)

सत्यमेव जयते

भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, देवास (म.प्र.)

केदारनाथ महापात्र
अध्यक्ष, नराकास

नरेन्द्र सिंह मेहरा
उप निदेशक (कार्यान्वयन)
क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय (मध्य भोपाल)

देवेन्द्र तिवारी
प्रबंधक एवं सदस्य सचिव, नराकास

क्रं.	कार्यालय का नाम पता	जानकारी	
		कार्यालय प्रधान का नाम	पदनाम
1.	बैंक नोट मुद्रणालय देवास	केदारनाथ महापात्र	मुख्य महाप्रबंधक
2.	केन्द्रीय ओद्योगिक सुरक्षा बल	एस संदीप कुमार	वरि. कमाण्डेन्ट
3.	रेल्वे स्टेशन, देवास	रामसागर यादव	स्टेशन प्रबंधक
4.	केन्द्रीय विद्यालय, देवास	भरत कुमार सेठ	प्रचार्य
5.	आयकर कार्यालय, देवास	रवि प्रकाश तिवारी	आयकर अधिकारी
6.	भारत संचार निगम लिमिटेड	किशोर कुमार कापडिया	क्षेत्रीय प्रबंधक
7.	केन्द्रीय उत्पाद एवं सीमा शुल्क 1	पुनीत कुमार आर्य	सहायक आयुक्त
8.	जिला समन्यवक, नेहरु युवा केन्द्र	तारा परगी	उपनिदेशक
9.	गैल गेस लिमिटेड	रजनीश कुमार गोयल	उप महाप्रबंधक
10.	केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग (सिविल)	महेन्द्र मेवाड़ा	कनिष्ठ अभियंता
11.	केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग (विद्युत)	निशांत सक्सेना	सहायक अभियंता
12.	राष्ट्रीय सूचना विज्ञान केन्द्र	मनीष कुमार खत्री	जिला सूचना विज्ञान अधिकारी
13.	युनियन बैंक ऑफ इण्डिया	धीरज सुरेश गवई	शाखा प्रबंधक
14.	सेंट्रल बैंक ऑफ इण्डिया	जतिन सिंघल	वरि. प्रबंधक
15.	बैंक ऑफ महाराष्ट्र	मोहम्मद मंजर	शाखा प्रबंधक
16.	केनरा बैंक	जयेश धनघेलिया	शाखा प्रबंधक
17.	भारतीय स्टेट बैंक, क्षेत्रीय कार्यलय	विजय नाथ मिश्र	क्षेत्रीय महाप्रबंधक
18.	जवाहर नवोदय विद्यालय	प्रमेन्द्र कुमार	प्रचार्य
19.	बैंक ऑफ इण्डिया, अग्रणी जिला शाखा	प्रकाश केवलरमानी	जिला प्रबंधक
20.	पंजाब नेशनल बैंक	धीरज कुमार चौधरी	विर. प्रबंधक
21.	बैंक ऑफ बड़ोदा	गौतम कुमार	शाखा प्रबंधक
22.	मुख्य डाक घर	मुकेश सोनी	शाखा प्रबंधक
23.	भारतीय पोस्टल पेमेंट बैंक	अवनी गुप्ता	शाखा प्रबंधक
24.	यूको बैंक	रोहित जावरिया	शाखा प्रबंधक
25.	इण्डियन बैंक	अंकुर असावा	मुख्य प्रबंधक
26.	इण्डियन ओवरसीज बैंक	राजेन्द्र कुमार भंवरकुआ	शाखा प्रबंधक
27.	भारतीय जीवन बीमा निगम	नितिन सांगलीकर	शाखा प्रबंधक
28.	ओरिएण्टल इंश्योरेंस कं.लि.मि.	ईग्नासियुस तिर्की	शाखा प्रबंधक-
29.	युनाइटेड इंश्योरेंस कं.लि.मि.	अनुराग कुमार साहू	शाखा प्रबंधक
30.	न्यू इण्डिया इंश्योरेंस कं.लि.मि.	राम प्रताप मीना	मुख्य व्यवसाय प्रबंधक
31.	नेशनल इंश्योरेंस कं.लि.मि.	हेमचंद बाम	शाखा प्रबंधक

विविध गतिविधियों की कहानी चित्रों की जुबानी...

सलाहकार आर्थिक कार्य विभाग, वित्त मंत्रालय का दौरा

सुश्री अपर्णा भाटिया, सलाहकार आर्थिक कार्य विभाग, वित्त मंत्रालय, भारत सरकार का दिनांकः 14.10.2025 को बैंक नोट मुद्रणालय, देवास का दौरा किया गया, उनके साथ निगम मुख्यालय से पधारे श्री सुनिल कुमार सिन्हा निदेशक (मा.सं) भी उपस्थित थे।

न. रा.का.स. देवास की अद्धवार्षिक बैठक

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति देवास के तत्वावधान में वर्ष 2025 की अर्द्धवार्षिक बैठक दिनांकः 24.07.2025 को बैंक नोट मुद्रणालय, देवास एवं दिनांकः 10.12.2025 को द्वितीय अर्द्धवार्षिक बैठक का आयोजन होटल खेड़ापति, देवास में किया गया। इस बैठक में बैंक नोट मुद्रणालय के मुख्य महाप्रबंधक एवं न.रा.का.स. अध्यक्ष श्री के एन महापात्र एवं सदस्य सचिव श्री देवेन्द्र तिवारी के साथ न.रा.का.स. के सभी सदस्य कार्यालयों के प्रमुख एवं वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित थे। मुख्य महाप्रबंधक बैंक नोट मुद्रणालय, देवास एवं अध्यक्ष न. रा. का.स. एवं उप निदेशक, क्षे.का.का, भोपाल द्वारा सभी सदस्य कार्यालयों की छः माही रिर्पोट की समीक्षा की गई एवं राजभाषा कार्यान्वयन हेतु निदेश जारी किया गया। सदस्य सचिव देवेन्द्र तिवारी ने सभी कार्यालयों को संबोधित करते हुए राजभाषा के प्रावधानों से अवगत कराया। बैठक का संचालन श्री विवेक प्रसाद, वरिष्ठ पर्यवेक्षक (रा.भा.) द्वारा किया गया।

66 वीं ईपीएफ एवं 59 वीं पीएफ की बैठक

बैंक नोट मुद्रणालय, देवास में निगम मुख्यालय के सभी नौ इकाईयों का 66वीं ईपीएफ एवं 59वीं पीएफ बैठक का आयोजन किया गया जिसमे निगम मुख्यालय से श्री टी, नागराजन, निदेशक (वित्त) की अध्यक्षता में बैठक संपन्न हुई जिसमें सभी इकाईयो से पधारे यूनियन के वरिष्ठ पदाधिकारी शामिल थे।

स्वतंत्रता दिवस

बैंक नोट मुद्रणालय, देवास में दिनांक 15.08.2025 को स्वतंत्रता दिवस धुमधाम से मनाया गया । इस अवतर पर ध्वजारोहण समारोह आयोजित किया गया, जिसमें महाप्रबंधक महोदय ने ध्वजारोहण किया। इसके बाद राष्ट्रगान गाया गया और देशभक्ति गीतों की प्रस्तुति दी गई। कर्मचारियों ने स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों को श्रद्धांजलि अर्पित की और भारत माता की जय के नारे लगाए। इस अवसर पर मुख्य महाप्रबंधक महोदय ने अपने संबोधन में देश की प्रगति और समृद्धि के लिए सभी कर्मचारियों को प्रेरित किया। स्वतंत्रता दिवस समारोह ने राष्ट्रीय एकता और देशभक्ति की भावना को मजबूत किया।

गणतंत्र दिवस

बैंक नोट मुद्रणालय, देवास में दिनांक 26.01.2026 को गणतंत्र दिवस 2026 को राष्ट्रीय उत्साह और उल्लास के साथ मनाया गया। बैंक नोट मुद्रणालय, देवास केप्रांगण में आयोजित ध्वजारोहण समारोह में श्री के. एन. महापात्र, मुख्य महाप्रबंधक ने राष्ट्रीय ध्वज फहराया, जिसके बाद राष्ट्रगान का सामूहिक गान हुआ। मुख्य महाप्रबंधक महोदय ने अपने संबोधन में गणतंत्र दिवस के महत्व और बैंक नोट मुद्रणालय, देवास के पिछले वर्ष के उपलब्धियों और भविष्य के लक्ष्यों पर प्रकाश डाला और सभी कर्मचारियों को देश के विकास में योगदान देने के लिए प्रेरित किया गया। इस अवसर पर पिछले वर्ष के दौरान कई कर्मचारियों को उनके उत्कृष्ट योगदान हेतु सम्मानित किया गया। इस समारोह में कर्मचारियों में राष्ट्रीय एकता और गर्व की भावना को बढ़ावा दिया।

सतर्कता जागरूकता सप्ताह

बैंक नोट मुद्रणालय, देवास में मुख्य महाप्रबंधक श्री के. एन. महापात्र के नेतृत्व में एवं प्रबंधक (सतर्कता) श्री अमित यादव के सहयोग से बीएनपी में दिनांक 27.10.25 से 02.11.25 तक सतर्कता जागरूकता सप्ताह का आयोजित किया गया जिसमे सतर्कता सप्ताह के दौरान व्यापक स्तर पर विभिन्न प्रतियोगिताओं के साथ जागरूकता अभियान चलाया गया।

विश्व पर्यावरण दिवस

बैंक नोट मुद्रणालय, देवास में दिनांक 05.06.2025 को विश्व पर्यावरण दिवस मनाया गया। इस अवसर पर वृक्षारोपण अभियान, कचरा प्रबंधन, स्वच्छता अभियान पर संगठन के कर्मचारियों को जागरूक किया गया। मुख्य महाप्रबंधक महोदय ने अपने संबोधन में कहा हम सभी का कर्तव्य है कि हम पर्यावरण की रक्षा करें और एक स्वस्थ एवं हरा भरा भविष्य सुनिश्चित करें। इन गतिविधियों का उद्देश्य कर्मचारियों में पर्यावरणीय जिम्मेदारी की भावना को बढ़ावा देना और उन्हे दैनिक व्यवहार में जैसे कचरा पृथक्करण, ऊर्जा संरक्षण और हरित जीवन शैली को अपनाने के लिए प्रोत्साहित करना था।

अंतरराष्ट्रीय योग दिवस

बैंक नोट मुद्रणालय, देवास मैं दिनांक 21.06.2025 को मुख्य महाप्रबंधक सहित समस्त उच्चतर अधिकारियों की उपस्थिति में बैंक नोट मुद्रणालय, देवास में दिनांक 21.06.2025 अंतरराष्ट्रीय योग दिवस को बड़े उत्साह के साथ मनाया। इस कार्यक्रम में विभिन्न योगासन और प्राणायाम, योग से स्वास्थ्य लाभों पर चर्चा, योग प्रदर्शन और प्रतियोगिताएं आयोजित की गयी। इस आयोजन का मुख्य उद्देश्य कर्मचारियों के शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य को बढ़ावा देना, तनाव मुक्ति सकारात्मक ऊर्जा का संचार करना और योग संस्कृति का प्रचार करना था। कार्यक्रम में भाग लेने वाले सभी कर्मचारियों ने इस आयोजन को बेहद सराहा।

बैंक नोट मुद्रणालय, देवास में हिन्दी पखवाड़ा का आयोजन

बैंक नोट मुद्रणालय, देवास में हिन्दी पखवाड़ा दिनांकः 14.09.2025 से 30.09.2025 तक मनाया गया। जिसमें हिन्दी का प्रचार -प्रसार बढ़ाने हेतु विभिन्न प्रतियोगिताएं आयोजित की गई।

(1) दिनांकः 18.09.2025 को अधिकारी वर्ग हेतु निबंध एवं सा. ज्ञान प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें 23 प्रतिभागियो ने भाग लिया

(2) दिनांक: 20.09.2025 को कर्मचारी वर्ग हेतु निबंध एवं सा. ज्ञान प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें 81 प्रतिभागियो ने भाग लिया।

(3) दिनांक: 22.09.2025 को वर्ग पहेली एवं शब्द ज्ञान प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। जिसमें 58 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

(4) दिनांक: 24.09.2025 को टिप्पण एवं पत्र लेखन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। जिसमें 41 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

(5) दिनांक: 26.09.2025 को अधिकारी वर्ग हेतु प्रश्नमंच प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। जिसमें 31 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

(6) दिनांक: 30.09.2025 को कर्मचारी वर्ग हेतु प्रश्नमंच प्रतियोगिता में सर्वाधिक 87 प्रतिभागियो ने भाग लिया। मुद्रणालय के कुल 321 अधिकारी / पर्यवेक्षकों एवं कर्मचारियों ने अति उत्साह से इन प्रतियोगिताओं में भाग लिया।

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, देवास का हिन्दी पखवाड़ा

1. नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, देवास का हिन्दी पखवाड़ा दिनांक 14.09.2025 से 29.09.2025 तक सीनियर क्लब, चामुण्डी अतिथि गृह, बीएनपी, देवास में मनाया गया। इस दौरान निम्नलिखित प्रतियोगितायें एवं संगोष्ठी आयोजित की गयी।

(1) दिनांक: 19.09.2025 को निबंध एवं सा. ज्ञान प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें 47 प्रतिभागियों ने भाग लिया

(2) दिनांक: 23.09.2025 को संयुक्त कार्यशाला / संगोष्ठी का आयोजन किया गया। जिसमें नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति से सदस्य कार्यालयों के कुल 53 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

(3) दिनांक: 25.09.2025 को हिन्दी ज्ञान एवं वर्ग पहेली प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। जिसमें नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति से सदस्य कार्यालयों के कुल 46 प्रतिभागियो ने भाग लिया।

(4) दिनांक 29.09.2025 को प्रश्नमंच (क्विज) प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। जिसमें नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के सदस्य कार्यालयो के सर्वाधिक 82 प्रतिभागियों ने भाग लिया। इस तरह नराकास पखवाड़ा के सभी प्रतियोगिताओं में कुल - 228 अधिकारी कर्मचारियों ने भाग लिया।

भूकंप आपदा से बचाव की तैयारियाः बीएनपी में मॉकड्रिल

बैंक नोट मुद्रणालय, देवास, में हर वर्ष नवंबर में आयोजित होने वाली मॉकड्रिल इस बार भी भूकंप से सुरक्षा विषय पर केन्द्रित रही। गुरूवार को एसडीईआरएफ एवं एनडीईआरएफ की विशेषज्ञ टीमों ने यह मॉकड्रिल कराई। ड्रिल का उद्देश्य था भूकंप की स्थिति में इमारतों में फंसे लोगों को सुरक्षित बाहर निकालने, प्राथमिक उपचार देने और तत्काल बचाव के तरीकों को व्यावहारिक रूप से प्रदर्शित करना। इस मौके पर दशमेश सोशल एंड एजुकेशनल सोसायटी ने भी सक्रिय सहभागिता दर्ज कराई। संस्था के अध्यक्ष सनमीत खनूजा ने वताया कि संस्था के सदस्यों ने पूरी जिम्मेदारी और अनुशासन के साथ मॉकड्रिल, में भाग लेकर बचाव दल के प्रयासों का सहयोग किया। उन्होंने कहा कि ऐसे प्रशिक्षण न केवल जागरूकता बढ़ाते हैं बल्कि किसी भी आपदा के दौरान हम सभी को मानसिक रूप से तैयार भी करते हैं। ड्रिल के दौरान विशेषज्ञ टीमों ने भूकंप आने पर तुरंत किए जाने वाले कदमों, सुरक्षित स्थानों की पहचान, घायल व्यक्तियों को निकालने की तकनीकी, स्ट्रेचर संचालन, मौकेपर प्राथमिक चिकित्सा और संवेदनशील क्षेत्रों में त्वरित कार्रवाई जैसे महत्वपूर्ण पहलुओं का व्यापक प्रदर्शन किया। अभियान में होमगार्ड सब इंस्पेक्टर रोहन रायकवार, सौरभ यादव, सिविल डिफेन्स वालंटियर लोकेश वर्मा, राजेश जोशी एवं यशवंत जोशी सहित बीएनपी स्टाफ उपस्थित थे।

स्वच्छता पखवाड़ा -2025

बैंक नोट मुद्रणालय, देवास में दिनांक 17.09.2025 से 02.10.2025 को स्वच्छता पखवाड़ा आयोजित किया गया। स्वच्छता पखवाड़े के दौरान एक व्यापक स्वच्छता अभियान चलाया गया। मुख्य महाप्रबंधक श्री के. एन. महापात्र के नेतृत्व में कर्मचारियों ने बीएनपी रोड पर साफ सफाई किया। मुख्य महाप्रबंधक ने व्यक्तिगत रूप से कर्मचारियों को सम्मानित किया।

14 नवंबर, 2025 (बाल दिवस का आयोजन)

बैंक नोट मुद्रणालय, देवास में महिला समिति द्वारा हिन्दी स्कूल के बच्चों के लिए बाल दिवस का आयोजन किया गया जिसमे बच्चों के लिए विभिन्न कार्यक्रम एवं प्रतियोगिता का आयोजन किया गया एवं सभी बच्चों के पुरस्कार दिए गए।

दीपावली मिलन समारोह

बैंक नोट मुद्रणालय, देवास के सिनियर क्लब में दिपावली मिलन समारोह का आयोजन किया गया जिसमे मुख्य महाप्रबंधक सहित सभी कार्यपालक वर्ग उपस्थित थे एवं उनके परिजनो द्वारा विभिन्न कार्यक्रमो में प्रतिभागिता की गई साथ ही मुख्य महाप्रबंधक द्वारा दीपावली के पावन अवसर पर संदेश के साथ सभी को शुभकामनाएं दी गई।

संरक्षा सप्ताह का आयोजनः

बैंक नोट मुद्रणालय, देवास में राष्ट्रीय संरक्षा सप्ताह मुख्य महाप्रबंधक की अध्यक्षता में दिनांक 04 मार्च, 2026 से 10 मार्च 2026 तक आयोजित किया गया। इस दौरान विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। जिसमें केन्द्रीय ओद्योगिक सुरक्षा बल के जवान एवं बीएनपी के अधिकारी एवं कर्मचारीगणों द्वारा विभिन्न कार्यकलापों में भाग लिया गया एवं समापन समारोह में महाप्रबंधक श्री के. एन. महापात्र द्वारा संरक्षा एवं सुरक्षा से संबंधित विषयों पर सभी को संबोधित किया गया।

राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति विभाग को 'प्रशंसनीय नराकास'

राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों में राजभाषा के सर्वोत्कृष्ट कार्यान्वयन हेतु, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, देवास को 'प्रशंसनीय नराकास' के सम्मान हेतु चयनित किया गया, एवं मुख्य महाप्रबंधक बैंक नोट प्रेस, देवास को क्रमश: नराकास देवास की अध्यक्षता एवं प्रबन्धक (रा.भा.) बैंक नोट प्रेस, देवास को नराकास देवास के सदस्य सचिव के तौर पर किए गए प्रशंसनीय योगदान हेतु भारत सरकार, राजभाषा विभाग द्वारा गांधी नगर में आयोजित राजभाषा सम्मेलन में दिनाक 15 सितंबर 2025 को सम्माननीय सचिव महोदया राजभाषा विभाग भारत सरकार द्वारा प्रमाण पत्र से सम्मानित किया गया

निगम स्थापना दिवस

दिनांकः 10.02.2026 को सिक्योरिटी प्रिंटिंग एंड मिंटिंग कॉरपोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड की स्थापना दिवस बैंक नोट प्रेस देवास में धूम-धाम से मनाया गया। इस उपलक्ष्य में बैंक नोट मुद्रणालय, देवास में मुख्य महाप्रबंधक द्वारा सभी को बधाई संदेश दिये गये एवं निगम की विकास यात्रा एवं प्रगति को याद किया गया और आने वाले भविष्य में निर्धारित लक्ष्य को हासिल करने पर जोर दिया गया।

विविध गतिविधियों की कहानी चित्रों की जुबानी...

श्री थेल्लिकारप्पा, प्रबंध निदेशक, बैंक नोट पेपर मिल, मैसूर का दौरा

बीएनपी में बेडमिंटन की प्रतियोगिता

आई. एस. ओ मिटिंग

वेंडर मिट की झलकियां

डीआईजी, के. औ. सु. बल का दौरा

बीएनपी में मॉकड्रिल का आयोजन

अग्नि शमन सप्ताह

बाबा साहेब अंबेडकर स्मृति आयोजन

माननीय संसदीय राजभाषा समिति सम्मानीय सदस्यों द्वारा बैंक नोट प्रेस देवास की प्रदर्शनी दीर्घा का अवलोकन

बैंक नोट प्रेस देवास वर्ष 2024–25 का नराकास चलशील्ड प्राप्त करते हुए।

अध्यक्ष, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति देवास
"प्रशंसनीय नराकास" का सम्मान प्राप्त करते हुए।

बैंक नोट मुद्रणालय देवास को सेफ्टी काउंसिल भोपाल
के द्वारा प्राप्त सुरक्षा प्लेटिनम पुरस्कार

युगंधर प्रिंटर्स : 9893699948